बाल विज्ञान पत्रिका

चकमक

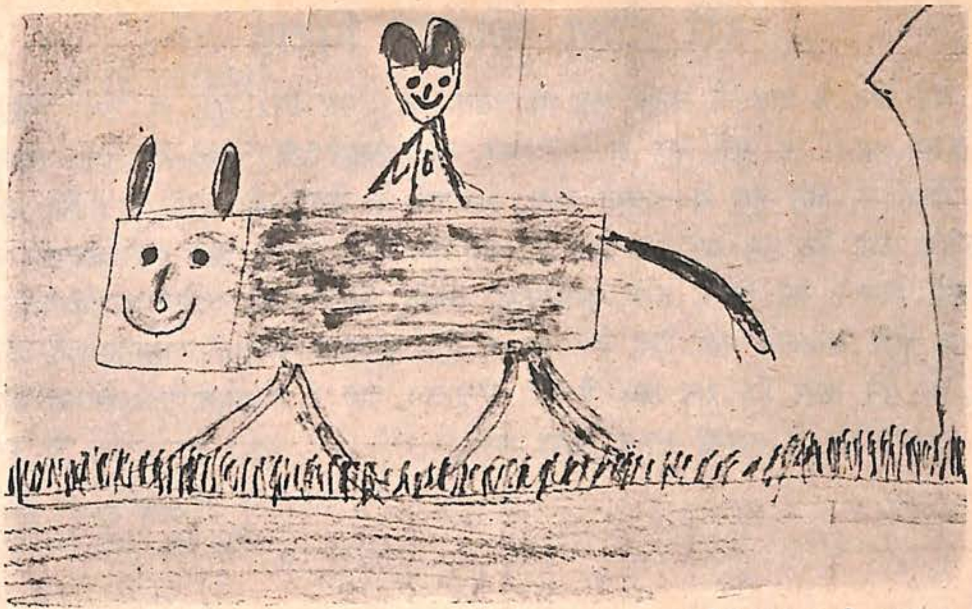
दिसंबर, 1989

रु. 4.00





गोविंदराम, उन्नाव



रफ़ीक ख़ान, पहली, गाडरवारा

चकमक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 5 अंक 6 दिसम्बर, 89

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही

कला
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
हिमांशु बिस्वास, कमलसिंह

चकमक का चंदा

एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए

डाक खर्च मुफ्त

चंदा, मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता :
एकलव्य,
ई-1/208, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद् (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)

इस अंक में...

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

मेरे दोस्त की हुई पिटाई

उन दिनों की बात है जब मैं कक्षा छह में पढ़ता था। मेरा मित्र मुझे हर समय पिटवाने की कोशिश करता था। वह मुझे सर से पिटवाकर खूब हंसता था। एक बार की बात है जब हम दोनों डेस्क पर बैठे हुए थे। उसने कहा, निकलने के लिए मुझे जगह दो। मैंने उसे जगह दे दी। उसने कहा कि हम बड़े महाराजा हैं और तुम हमारे सेवक हो। इस बात पर मैंने उसे निकलने नहीं दिया। वह किसी तरह कूदा-फांदी करके सर के पास पहुंच गया। सर से कहा कि सर यह मुझे निकलने नहीं देता है। सर ने मुझे बुलाकर कहा कि तुम इसे निकलने क्यों नहीं देते, तो मैंने कहा कि सर जब मैं इसे निकलने देता हूं तो यह मुझे सेवक कहता है। यह बात सुनकर सर ने उसकी बहुत पिटाई की।

☐ दीपक जैसवाल, सातवीं, टिमरनी



तुलसीराम चढ़ार, छटवीं, धतूरिया, भोपाल

मास्टरजी का सबक़

जब मैं पांचवीं कक्षा में पढ़ता था, उस समय की बात है। मैं एक दिन गणित की कापी ले जाना भूल गया। इसलिए मास्टर जी ने ज़ोरों की पिटाई कर दी। जब छुट्टी की घंटी बजी तो मैंने मन में निश्चय किया कि आज मास्टर जी को सबक़ सिखाऊंगा। मास्टर जी रोज़ शाम को स्कूटर से ट्यूशन पढ़ाने जाते थे। गांव की गली संकरी थी। मैं घर आकर उपाय सोचने लगा। आख़िर एक उपाय सोच ही लिया।

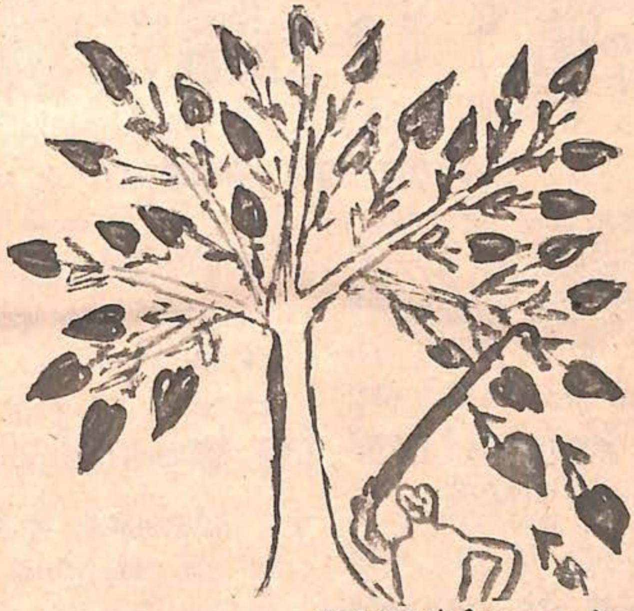
शाम को पड़ोसी के कुत्ते के दो पिल्लों को लेकर मास्टर जी का इंतज़ार करने लगा। जैसे ही मास्टर जी आते दिखाई दिए, मैंने कुत्ते के पिल्लों को छोड़ दिया। पिल्ले घबराकर इधर-उधर भागने लगे। मास्टरजी भी घबरा गए। घबराहट में वे स्कूटर से गिर पड़े और उनका बांया हाथ टूट गया। आवाज़ से लोग इकट्ठे हो गए और मास्टर जी को अस्पताल पहुंचाया। दो-चार दिन बाद मास्टर जी चलने-फिरने लगे। पर हाथ पर प्लास्टर तो बंधा ही था। मैं घबरा रहा था कि अब मास्टर जी फिर मेरी पिटाई करेंगे।

गणित का पीरियड आया, मास्टर जी ने कापी चेक करना शुरू किया। जब मेरी बारी आई तो मैंने घबराकर मास्टर जी के सामने कापी रख दी। कापी चेक करके मास्टर जी ने कहा, "तुमने सभी सवाल सही किए हैं, शाबास।" और उन्होंने प्लास्टर बंधे हाथ से मेरी पीठ ठोकी।

☐ लोकेश कुमार साहू, नवमीं, मोहका, रायपुर

मेरी शाला

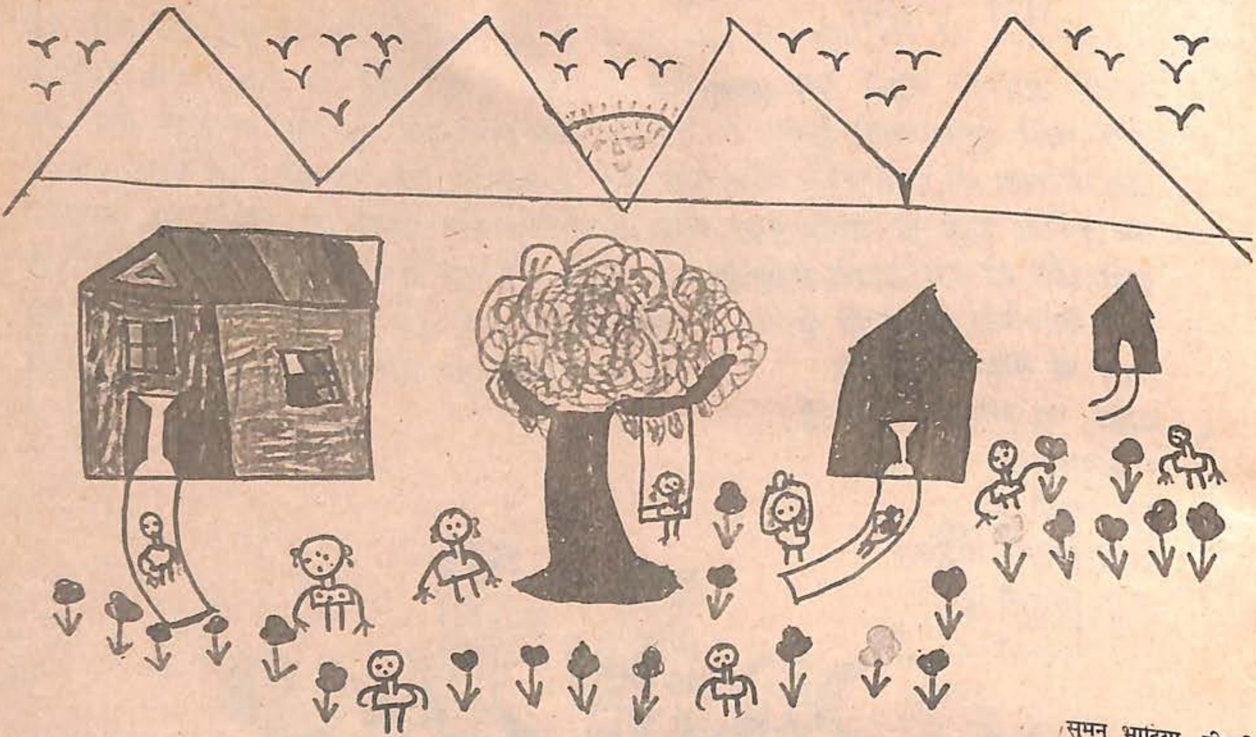
कच्ची खपरैलों वाली मेरी शाला
रोज़ सवेरे खुल जाती है
जब बरसता है पानी
तब हमारी छुट्टी हो जाती है।
छुट्टी होते ही हम इमली-कैंथा के
पेड़ों के नीचे दौड़े जाते हैं
साथ में तोड़ने के लिए
पत्थर भी बीन ले जाते हैं
सहेलियां पेड़ पर भी
चढ़ जाती हैं,
कैंथा-इमली तोड़कर
नीचे गिराती हैं।



कल्लू ख़ान मंसूरी अरलावदा, देवास

एक दिन तीरथ पंडित जी
ने देख लिया
सबको बुलाकर बेशरम
की डंडी से पीट दिया
तब से हम छुट्टी होते ही
घर आ जाते हैं!

☐ अनुराधा दुबे, भरेवा (शहडोल)



सुमन भाटिया, तीसरी

चरणों का प्रसाद

एक कंजूस आदमी था। उसके पुत्र हुआ, तो मित्र लोग उसके पीछे पड़ गए कि मुंह मीठा कराना पड़ेगा। कुछ दिन तो वह टालता रहा, पर जब दोस्तों ने किसी भी तरह पिंड नहीं छोड़ा तो उसने कह दिया कि अच्छी बात है, परसों आप लोग मेरे घर आ जाना। गोठ पक्की रही।

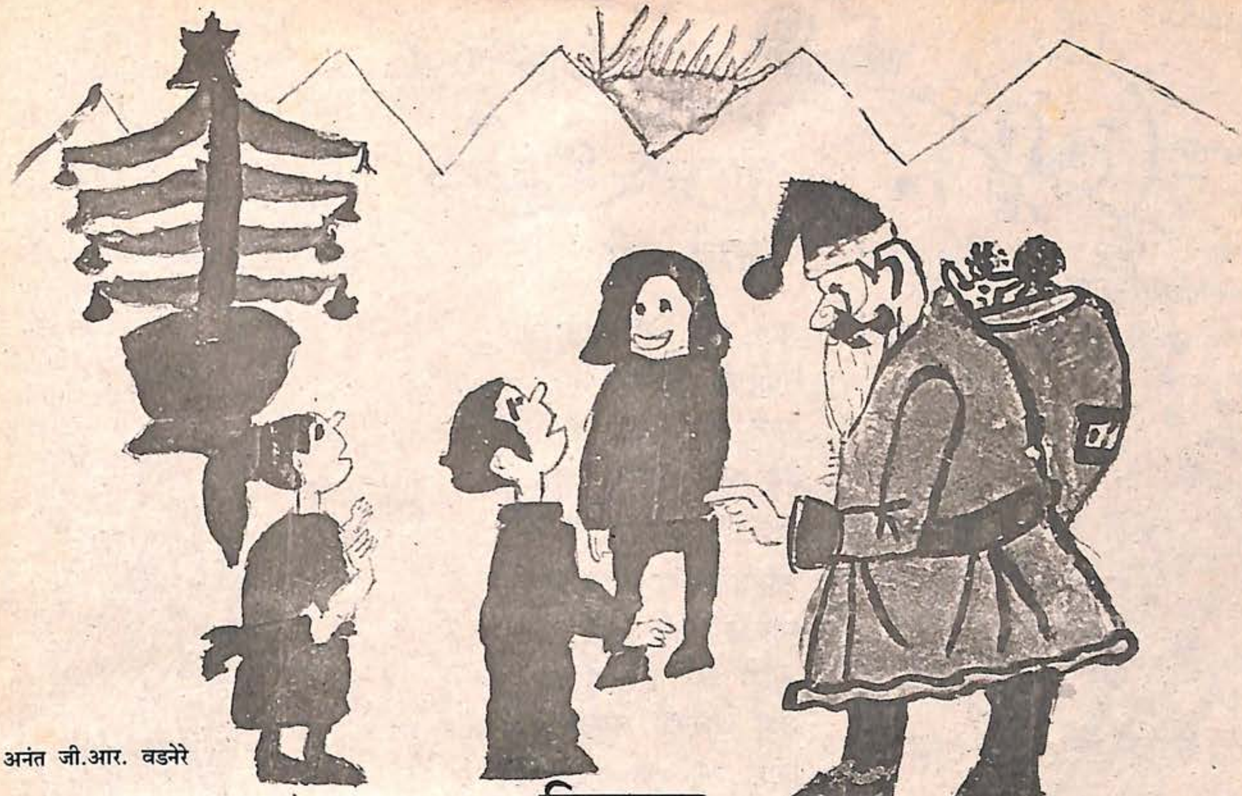
जब सब लोग निश्चित दिन गोठ जीमने के लिए पहुंच गए तो उनको अच्छी तरह खाना परोसकर वह कंजूस हवा करने लगा। भोजन की सामग्री बहुत अच्छी थी। लोगों ने बहुत सराही। लेकिन वह कंजूस तो बार-बार यही कहता रहा, "सब आपके चरणों का प्रसाद है। बंदे की तो हवा ही हवा है।"

इस बीच कंजूस का भाई सारे आगंतुकों की जूतियां उठाकर हलवाई के यहां रख आया व कह आया, "आज आपके यहां से जितना सामान मंगवाया है, उसके बदले में जूतियां गिरवी रखे जाता हूं। अगर कोई मांगने आए तो उससे पैसे लेते जाना।"

जब भोजन समाप्त हो गया तो सारे लोग एक स्वर में बोले कि, "खाना तो क्या ही अच्छा बना था।" कंजूस ने फिर कह दिया, " आप ही के चरणों का प्रसाद है।"

उस वक्त तो कंजूस की मर्म भरी वाणी का अर्थ कोई समझ नहीं पाया। लेकिन जब आगंतुक लोग घर जाने के लिए अपनी-अपनी जूतियां खोजने लगे तथा कंजूस से जब पूछा कि, "हमारी जूतियां कहां हैं?" तो कंजूस बोला, "मैं तो बार-बार आपको कह रहा था न कि आपके ही चरणों का प्रसाद है, बंदे की तो हवा ही हवा है। आप कोई समझे नहीं तो मैं क्या करूं? जूतियां हलवाई के यहां गिरवी पड़ी हैं। पैसे देते जाइए व छुड़ाते जाइए!"

(एक राजस्थानी लोककथा पर आधारित)
प्रस्तुति : **निशा व्यास, ग्यारहवीं, गढ़सिवाना, राजस्थान**



अनंत जी.आर. वडनेरे

क्रिसमस

कहते हैं कि सेंटा क्लाज़ हर साल क्रिसमस के दिन बच्चों को उपहार बांटने आते हैं। क्रिसमस ईसाइयों का सबसे बड़ा त्यौहार है। इस दिन ईसा मसीह का जन्म हुआ था। हरे, लाल, पीले गुब्बारों और खिलौनों से क्रिसमस पेड़ सजाया जाता है। कोई सेंटा क्लाज़ बनकर उपहार बांटता है। उसकी बरफ़ की सी सफेद दाढ़ी और लाल चोंगा देखकर बच्चे ख़ुश होते हैं।

☐ गोविंदराम, उन्नाव

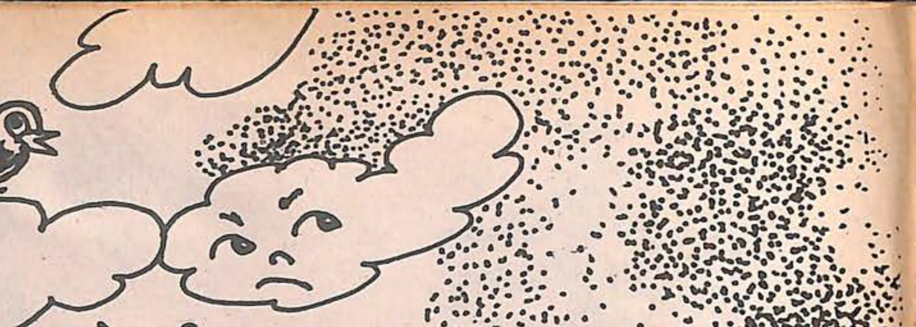
मैना बाई को चढ़ा बुखार

एक दिन जब मैना बाई घर में खेल रही थी और वह जब खेलते-खेलते गिर पड़ी मनो कि चक्कर आ गए थे। जब घर उसकी नानी मां के पास पहुंची तो नानी मां ने पूछा, बेटी क्या हो गया है! तब मैना बोली, मां मैं खेलते-खेलते चक्कर आ गए तो गिर पड़ी। नानी मां ने कहा कि तुझे बुखार आ गया है। तब मैना नहीं जानती थी कि बुखार क्या होता है। नानी बोली, बेटी बुखार वह चीज़ है जिसमें एकदम ठंड लगती है और फिर जी अच्छा नहीं रहता। मैना बोली, क्या इसे बुखार कहते हैं। नानी मां बोली, हां बेटी बुखार इसे कहते हैं। बेटी तू अब सो जा।

फिर शाम को मैना के माता-पिता आए। मैना की मां ने अपनी मां से पूछा, इसे क्या हो गया है, यह क्यों सो गई है। नानी मां ने कहा, बेटी इसे बुखार आ गया है। मैना की मां ने पूछा, कब से? नानी मां बोली, तीन बजे से। मैना की मां बोली, फिर तो इसे अस्पताल ले जाना पड़ेगा। मैना के पापा बोले, अभी चलो। चलो साइकिल से चलो।

दवाखाने में डॉक्टर बोला, खून में खराबी है, शरीर कमज़ोर हो गया है। पर फ़िकर मत करो ठीक हो जाएगी। फिर मैना अच्छी हो गई।

☐ दीपचंद, नवमीं, कालूखेड़ी, देवास

जाड़े जी

जाड़े जी, ओ जाड़े जी
सर्दी के हरकारे जी
आते ही बारिश के तंबू
डेरे आप उखाड़ें जी!
जाड़े जी, ओ जाड़े जी!

कोहरा छाया खूब घना
मछुआरे का जाल तना
ओले की बौछारों ने
क्या जमकर छक्के मारे जी!
जाड़े जी, ओ जाड़े जी!

धुआं उगलते हैं मुखराम
बहती नाक सवेरे-शाम
दांत मियां डरकर किट-किट-किट
रटते रोज़ पहाड़े जी!
जाड़े जी, ओ जाड़े जी!

ऊनी कपड़े गरम-गरम
गरम पेय का है मौसम
बढ़ गई रातें, लो खर्राटे
दिन तो गए पछाड़े जी!
जाड़े जी, ओ जाड़े जी!



□ भगवती प्रसाद द्विवेदी
चित्र : विवेक





नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे



दूसरे दिन सुबह बरफ़बारी बंद हो गई और आसमान साफ़ हो गया।

स्कूल की रिक्शागाड़ी बच्चों को शाला पहुंचा गई। वे लोग शाला की अध्यापिकाओं और कर्मचारियों को नए साल का मुबारकबाद देने आए थे ठंड की वजह से बच्चों के चेहरे सेब की तरह लाल हो गए थे। पर उन्हें ठंड की जरा भी परवाह नहीं थी। वे बड़े ख़ुश थे और चारों तरफ उछल-कूद रहे थे।

शाला की अध्यापिकाएं,रसोइयों व अन्य कर्मचारियों के साथ दरवाज़े पर खड़ी थीं। सब लोगों ने तालियां बजाकर बच्चों का स्वागत किया। फिर बच्चों ने गाना सुनाया। गाने में उन्होंने शाला की अध्यापिकाओं, कर्मचारियों और रसोइयों के प्रति आभार प्रकट किया और उनका शुक्रिया अदा किया।

बच्चे गाना गा रहे थे और बड़े लोग मुस्कराते हुए तालियां बजा रहे थे। गाना ख़त्म होने पर बच्चे शाला के अंदर चले गए। वहां अंगीठी जली हुई थी। इसलिए कमरा गरम था। सूरज की रोशनी खिड़की से छनकर अंदर आ रही थी। छोटी-छोटी मेज़ कुर्सियां गोलाकार रखी हुई थीं। हर मेज़ पर बिस्कुट व टाफियों के अलावा बहुत से गिलास पड़े थे। जब बच्चे अच्छी तरह बैठ गए, तो अध्यापिकाओं ने गिलासों में गरम्-गरम चाय डाल दी।

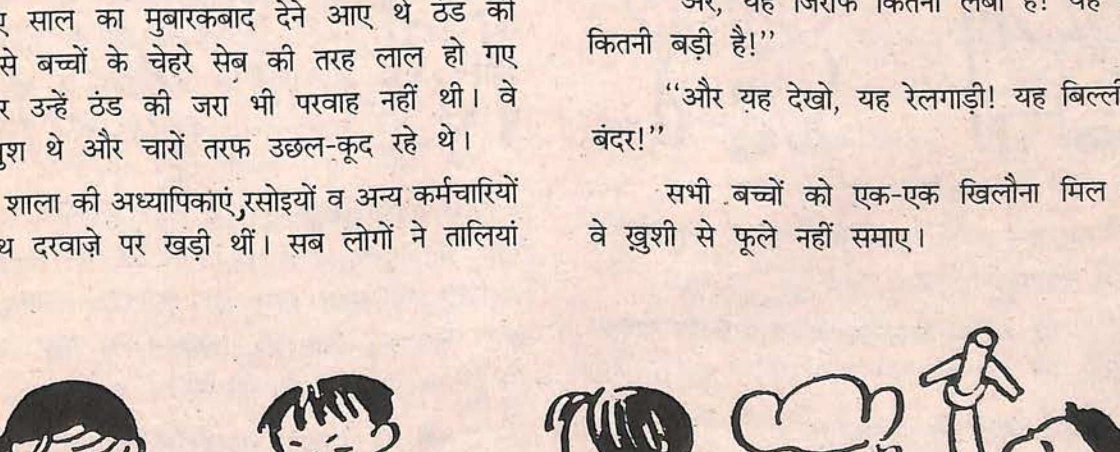
बच्चों ने अच्छी तरह जलपान किया। वह दृश्य देखने में बड़ा अच्छा लग रहा था। तभी अध्यापिका श्याओ और अध्यापिका श्वी अंदर आईं। क्या तुम बता सकते हो, उनके हाथ में क्या था? बच्चे खुशी से उछलने-कूदने लगे। वे एक साथ चिल्ला पड़े,

"जरा इस बाघ को तो देखो!"

"अरे, यह जिराफ कितना लंबा है! यह गुड़िया कितनी बड़ी है!"

"और यह देखो, यह रेलगाड़ी! यह बिल्ली, यह बंदर!"

सभी बच्चों को एक-एक खिलौना मिल गया। वे ख़ुशी से फूले नहीं समाए।





पर एक बच्चा उदास बैठा था। उसका नाम था तओतओ। वह अपने छोटे-से खिलौने को देखकर बहुत दुःखी था। उसके हिस्से नुकीली टोपी वाला वह कपड़े का छोटा-सा गुड्डा आया था। गुड्डा उसकी हथेली के बराबर भी नहीं था। जानते हो, गुड्डा कौन था? तुम लोगों ने सही अनुमान लगाया है। वह गुदड़ीलाल ही था।

अध्यापिका श्याओ ने तओतओ से उदास होने का कारण पूछा।

तओतओ ने सिर झुका लिया और कपड़े के गुड्डे को दोनों हाथ से पकड़ लिया। वह इतना दुःखी था कि उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकलता।



"क्या तुम्हें नन्हा गुदड़ीलाल पसंद नहीं है?" अध्यापिका श्याओ ने पूछा।

तओतओ ने सिर हिलाकर अपना असंतोष व्यक्त कर दिया।

"लेकिन यह तो बहुत प्यारा खिलौना है", अध्यापिका श्याओ मुस्कराती हुई बोली। "मुझे तो यह बहुत पसंद है। देखो तो यह बेचारा कितना दुःखी है। यह समझ गया है कि तुम इसे पसंद नहीं कर रहे।"

तओतओ फिर भी कुछ नहीं बोला। वह फिङफिङ की तरफ देखता रहा। फिङफिङ को प्यारी-सी बड़ी गुड़िया मिली थी जबकि उसे सिर्फ़ यह छोटा-सा गुड्डा मिला था।

फिङफिङ देख रही थी कि तओतओ लगातार उसी की गुड़िया की तरफ देख रहा है। 'शायद तओतओ को मेरी गुड़िया पसंद है', उसने मन ही मन सोचा। वह तओतओ से बोली, "तओतओ भैया, क्या तुम्हें मेरी गुड़िया पसंद है? अगर पसंद हो, तो इसे तुम ले लो।"

तओतओ ने सिर हिलाकर इंकार कर दिया।

अध्यापिका श्याओ समझ गई कि वह दूसरों का खिलौना लेना ठीक नहीं समझता। वह उसे समझाने लगी, "तओतओ, फिङफिङ तुम्हें अपनी गुड़िया ख़ुशी से दे रही है। अपना गुड्डा उसके साथ बदल क्यों नहीं लेते?"

दोनों बच्चों ने अपने-अपने खिलौने बदल लिए।



तओतओ बहुत ख़ुश हो गया। खिलौना हाथ में उठाए वह दूसरे बच्चों के साथ नाचने-गाने लगा। फिङफिङ भी बहुत खुश थी। हालांकि उसका गुड्डा बहुत छोटा था, फिर भी तओतओ को खुश देखकर उसे भी बहुत ख़ुशी हो रही थी।

कुछ देर शाला में खेलने के बाद सब बच्चे घर लौट गए। गुदड़ीलाल तओतओ के व्यवहार से बहुत दुःखी था। वह रुआंसा हो रहा था। पर आंसू थामे हुए था। वह जानता था कि इतने बच्चों के सामने रोना कितनी बुरी बात है!

गुदड़ीलाल की दिली ख़्वाहिश थी कि वह किसी लड़के को मिल जाए, जिससे वह वीर बन सके। फिङफिङ एक लड़की थी। पर क्या वह वीर नहीं थी? जब बच्चे रिक्शागाड़ी में चढ़ रहे थे, तो तओतओ रिक्शाचालक की मदद से चढ़ा था। लेकिन फिङफिङ कूदकर अपने आप चढ़ गई थी। वह सचमुच बड़ी बहादुर थी।

फिङफिङ ने नन्हे गुदड़ीलाल के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। वह रास्तेभर उसे देखकर मुस्कराती रही। गुदड़ीलाल को उसने अपने एक ऊनी दस्ताने से लपेट दिया। "तुम्हें ठंड तो नहीं लग रही?" उसने पूछा। "घबराओ मत, जल्दी ही हम घर पहुंच जाएंगे। वहां तुम अंगीठी से हाथ-पांव सेंक सकोगे। मैं तुम्हें रेलगाड़ी में सैर भी कराऊंगी। मेरी रेलगाड़ी बहुत अच्छी है। उसे धक्का नहीं देना पड़ता। वह अपने आप चलती है। ड्राइवर की सीट पर तुम बैठोगे।"

फिङफिङ के पास सचमुच एक ऐसी रेलगाड़ी थी जो खुद-ब-खुद चल सकती थी। गाड़ी में एक इंजन था और तीन हरे रंग के सुंदर से डिब्बे। हर डिब्बे में खिड़कियां थीं, जिनके नीचे पीले रंग की धारियां बनी थीं। काले इंजन के पीछे डिब्बे जुड़े हुए थे। देखने में वह एक असली मुसाफ़िर गाड़ी मालूम होती थी।

पर रेलगाड़ी तो पटरी पर चलती है! क्या फिङफिङ के पास पटरी भी थी? हां, उसके पास पटरी भी थी। पटरी लोहे के तार के टुकड़ों को जोड़कर बनाई गई थी। कुछ तार सीधे थे तो कुछ मुड़े हुए। इन सब तारों को गोलाई में जोड़कर एक लंबी पटरी बना दी गई थी। पटरी पर गाड़ी चक्कर लगा सकती थी।

यह रेलगाड़ी और पटरी फिङफिङ के पिता जी ने खुद बनाई थी। वे एक कुशल कारीगर थे। उन्होंने एक छोटी-सी कार भी बनाई थी, जिसमें घड़ी की तरह का एक इंजन लगा हुआ था। इंजन में चाबी भरने के बाद कार ज़मीन पर दौड़ने लगती थी।

फिङफिङ ने अपनी मां से सुना था कि उसके पिता जी पांच-छै साल कारख़ाने में काम सीखने के बाद एक कुशल कारीगर बन गए थे। उन दिनों वे पौ फटने से पहले काम पर जाते थे और तारे निकलने के बाद घर लौटते थे। इतना कठोर परिश्रम करने पर भी उनके परिवार को भरपेट खाना नसीब नहीं होता था। इसलिए उन्हें अवकाश के समय खिलौने बनाकर दुकान में बेचने पड़ते थे। रात-दिन मेहनत करने के बाद भी उनका गुजारा मुश्किल से चलता था। तब उसके पिता जी हमेशा ग़ुस्से से भरे रहते थे और मां के साथ लड़ते रहते थे।

फिङफिङ को बाक़ी सब बातें तो सच लगती थीं, पर पिता जी के स्वभाव के बारे में मां की बात पर विश्वास नहीं होता था। वे अब कितने बदल चुके थे! वे हमेशा ख़ुश रहते थे और कभी किसी पर ग़ुस्सा नहीं करते थे। मां से भी कभी नहीं लड़ते थे और उसका बहुत ख़याल रखते थे। कहीं ऐसा, तो नहीं कि मां ने उनके स्वभाव के बारे में सही बात न बताई हो? पिता जी उसे हमेशा समझाते रहते थे कि दूसरे बच्चों से कभी झगड़ा नहीं करना चाहिए। फिर उनका अपना स्वभाव भला झगड़ालू कैसे हो सकता था?

फिङफिङ घर लौटी, तो उसके पिता ज़ोर-ज़ोर से अख़बार पढ़ रहे थे : "हम कहते हैं, राष्ट्रीय अर्थतंत्र की बुनियाद है कृषि, और कृषि की बुनियाद है अनाज... ।"

फिङफिङ के पिता ने पढ़ना-लिखना मुक्ति के बाद ही सीखा था। इसके लिए उन्हें बड़ी मेहनत और लगन से काम करना पड़ा था। वे अक्सर बच्चों की तरह ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते थे।

फिङफिङ घर में घुसते ही पिताजी से बोली, "पापा, ज़रा इधर तो देखिए! मुझे अपनी रेलगाड़ी के लिए एक ड्राइवर मिल गया है!"

"कहां से मिला?" पिताजी ने आश्चर्य से पूछा।

"यह देखिए!" फिङफिङ ने गुड्डे को हाथ में उठाते हुए पिताजी को दिखाया।

"यह तो कपड़े का नन्हा-सा गुड्डा है!" पिताजी ने उत्सुकता से कहा।

"जी हां, यह एक नन्हा-सा गुड्डा है। इसे मेरी अध्यापिका ने मुझे दिया है। पर आप इसे कपड़े का नन्हा-सा गुड्डा न कहें! इसका एक अच्छा-सा नाम भी है!"

"अच्छा, तो इसका एक अच्छा-सा नाम भी है!" पिताजी ने हंसते हुए कहा। "क्या इसका नाम भी फिङफिङ तो नहीं है?"

"नहीं पापा, इसका नाम फिङफिङ नहीं है। इसका नाम है गुदड़ीलाल!" फिङफिङ ने उत्तर दिया।

"यह नाम इसे अध्यापिका श्याओ ने दिया है।"

फिङफिङ के पिताजी ने बेटी को गोद में बिठा लिया और कपड़े का गुड्डा उसके हाथ से ले लिया। फिर वे बड़े ग़ौर से उसे देखने लगे।

"यह सचमुच कितना सुंदर है!" उन्होंने कहा।

फिङफिङ को यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि उसके पिताजी को यह खिलौना बहुत पसंद आया।

"पापा, ज़रा रेलगाड़ी की पटरी तो बाहर निकाल दीजिए," उसने अनुरोध किया। "मैंने गुदड़ीलाल को रेलगाड़ी में घुमाने का वायदा किया है।"

पिताजी ने फ़ौरन मान लिया और कहा, "अच्छा, अभी निकालता हूं। तुम्हें अपना वायदा ज़रूर पूरा करना चाहिए।"

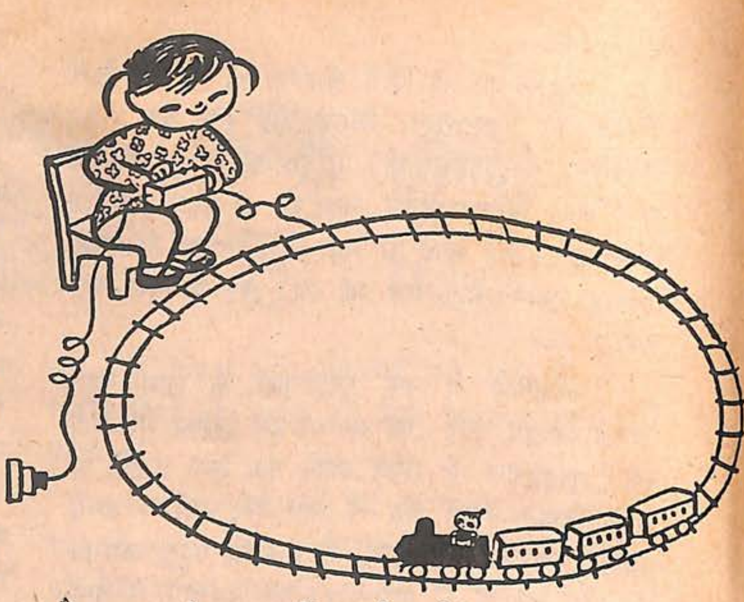
उन्होंने अलमारी खोली और उसमें से एक छोटा-सा काला डिब्बा निकाल लाए। फिङफिङ ने लोहे के तारों को फर्श पर बिछा दिया और उन्हें जोड़कर एक बड़ी-सी गोलाकार पटरी बना दी। पिताजी ने डिब्बे से जुड़े हुए एक बिजली के तार को पटरी से जोड़ दिया और दूसरे तार को प्लग-पॉइन्ट पर लगा दिया।

"पापा, क्या आपने पटरी से तार जोड़ दिया है?" फिङफिङ ने पूछा।

"हां," पिताजी ने उत्तर दिया।

फिङफिङ ने तीनों डिब्बे इंजन के पीछे लगा दिए और पूरी गाड़ी पटरी पर रख दी। फिर लकड़ी के ब्लाकों से दो सुंदर-से स्टेशन बना दिए। पहला स्टेशन लाल-पीले रंग का था दूसरा चौड़ा व लंबा था।

जब सब काम पूरा हो गया, तो फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को उठा लिया और बोली, "नन्हे गुदड़ीलाल, फिलहाल तुम्हारी गाड़ी स्टेशन पर खड़ी है। सभी यात्री गाड़ी में सवार हो चुके हैं। वे दूसरे स्टेशन जाना चाहते

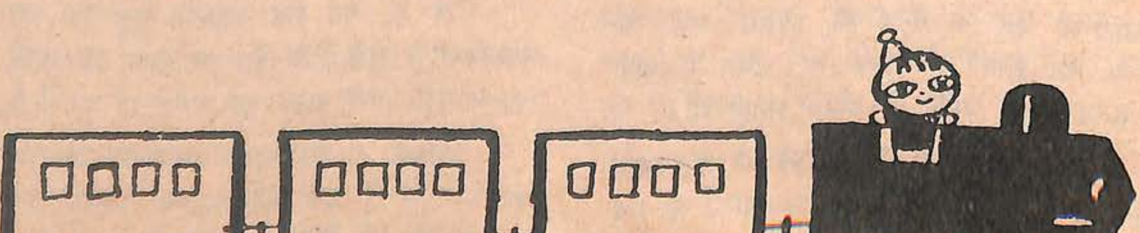


हैं। पर गाड़ी चल नहीं सकती, क्योंकि उसका ड्राइवर अभी पहुंचा नहीं। जानते हो, इसका ड्राइवर कौन है? इसका ड्राइवर गुदड़ीलाल है! समझ में आया कि नहीं? ड्राइवर साहब, अब ज़रा उठिए और अपनी सीट पर बैठ जाइए।"

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को उठाकर ड्राइवर की सीट पर बिठा दिया। सीट बहुत छोटी थी। लेकिन वह ख़ुद भी बहुत छोटा था। इसलिए उस पर अच्छी तरह बैठ गया। फिङफिङ बहुत ख़ुश हुई। पर गुदड़ीलाल कुछ घबराया हुआ-सा लग रहा था।

"डरने की कोई बात नहीं," फिङफिङ ने समझाया। "तुम्हें रेलगाड़ी चलाने में कोई कठिनाई नहीं होगी। मैं भी बड़ी होकर रेलगाड़ी चलाना सीखूंगी।"

फिङफिङ ने पटरी के पास एक कुर्सी रख दी और उस पर बैठ गई। उसने काले डिब्बे को अपनी गोद में उठा लिया। डिब्बे में बिजली के बटन लगे थे। फिङफिङ ने एक बटन दबाया और रेलगाड़ी धीरे-धीरे चलने लगी।



फिङफिङ ने मुंह से सीटी बजाई और फिर दूसरा बटन दबा दिया। गाड़ी तेज़ चलने लगी।

गुदड़ीलाल बहुत घबराया हुआ था। हालांकि फिङफिङ उसे बता चुकी थी कि गाड़ी चलाने में उसे कोई कठिनाई नहीं होगी, फिर भी उसे बड़ा डर लग रहा था, क्योंकि वह ज़िंदगी में पहली बार गाड़ी चला रहा था। ज्यों-ज्यों गाड़ी की रफ़्तार तेज़ होती गई, गुदड़ीलाल की घबराहट भी बढ़ती गई। उसे रोना आने लगा।



"गुदड़ीलाल, तुमने तो गाड़ी चलाने में कमाल ही कर दिखाया!" फिङफिङ ने उसे सीट से उठाते हुए कहा। "तुम्हें कुछ और बहादुरी से काम लेना चाहिए। धीरे-धीरे तुम ज़रूर बहादुर बन जाओगे।"

गुदड़ीलाल को अपनी प्रशंसा सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई।

"पापा, गुदड़ीलाल के बारे में आपका क्या ख़्याल है? क्या वह एक अच्छा ड्राइवर नहीं है?" फिङफिङ ने पिताजी से पूछा।

"इसमें क्या शक है!" पिताजी ने कहा। और दोनों एक-दूसरे की तरफ़ देखकर मुस्कराने लगे। गुदड़ीलाल खुशी से फूला न समाया।

उसी समय फिङफिङ की मां कमरे में आ गई। उसके हाथ आटे से सने थे। वह रसोईघर में "च्याओचि" (समोसे के आकार का एक चीनी व्यंजन) बना रही थी। फिङफिङ के ज़ोर-जोर से हंसने-चिल्लाने की आवाज़ सुनकर उनकी भौंहें तन गईं।

"फिङफिङ तुम इतना शोर क्यों मचा रही हो?" मां ने कहा।

"कोई बात नहीं," पिताजी ने कहा। "आज नया साल है। हम दोनों एक साथ खेल रहे हैं।"

यह सच था कि फिङफिङ के पिताजी बहुत व्यस्त रहते थे। घर पहुंचते ही वे मेज़ पर बैठ जाते थे। कभी कुछ लिखने लगते थे, तो कभी कुछ पढ़ने या सोचने लगते थे।

पर आज की बात कुछ और थी। आज नया साल था और वे कुछ अवकाश निकाल सकते थे। वे फिङफिङ और गुदड़ीलाल के साथ काफ़ी देर खेलते रहे। जब मां ने "च्याओचि" बनाकर तैयार कर लिए, तब कहीं उन्होंने खेलना बंद किया। फिङफिङ को अब भूख लग आई थी।

"पापा, क्या आज गुदड़ीलाल भी हमारे साथ खाना खाएगा?" फिङफिङ ने पूछा।

"क्यों नहीं", पिताजी ने जवाब दिया। "आज वह हमारे घर पहली बार आया है। वह हमारा नन्हा-सा मेहमान है।"

फिङफिङ ने गुदड़ीलाल को मेज़ पर बिठा दिया और उसके सामने खाना परोस दिया।

"खाना खाओ भाई! हमारे घर को अपना ही घर समझो!" 'च्याओचि' प्लेट में डालते हुए वह बड़ी नम्रता से बोली।



पिताजी ने भी नन्हे गुदड़ीलाल से अनुरोध किया, "शरमाओ मत, बेटा। अच्छी तरह खा लो। आज से तुम भी हमारे परिवार के सदस्य बन गए हो!"

अगले अंकों में गुदड़ीलाल के नए-नए कारनामे पढ़ने के लिए तैयार रहो!

मूल लेखक : सुन यओच्युन
अनुवादक : जानकी एवं श्यामा बल्लभ
सभी चित्र : शन फेई



चुपका

चुपका

इन छोटे पक्षियों के झुंड के झुंड ठंड के मौसम में पानी से भरे गड्ढों, तालाबों और धान के खेतों, आदि के किनारे पाए जाते हैं।

चुपके के शरीर का निचला भाग सफ़ेद और ऊपर का भाग भूरे-कत्थई रंग का होता है। ऊपरी गहरे रंग के भाग पर सफ़ेद धब्बे होते हैं। नर और मादा समान होते हैं। इन पक्षियों का भोजन विभिन्न प्रकार के कीड़े हैं, जिन्हें ये कीचड़ से निकाल कर खाते हैं। चुपका अपने शरीर के पिछले भाग को लगातार ऊपर-नीचे हिलाता रहता है।

ये पक्षी गर्मी के मौसम में उत्तरी एशिया और यूरोप चले जाते हैं। अप्रैल, 1967 में कलकत्ता के निकट एक 'चुपके' के पैर में छल्ला डाला गया था। केवल 48 दिनों के बाद यह पक्षी कलकत्ता से 6200 किलोमीटर दूर, रूस के उत्तर-पूर्वी कोने में मगादान प्रदेश में पकड़ा गया। क्या तुम नक्शे में कलकत्ता और मगादान प्रदेश ढूंढ़ सकते हो?

इसका प्रजनन ठंडे प्रदेशों में मई-जून में होता है। दलदली ज़मीन के किसी सूखे भाग में बनाया गया उथला गड्ढा ही इसका घोंसला होता है।

चहा

चहा उन प्रवासी पक्षियों में से है जो ठंड के मौसम में पानी से भरे गड्ढों, तालाबों आदि के किनारों पर



चहा

ही देखे जा सकते हैं। इसका आकार लगभग मैना के बराबर होता है लेकिन इसकी चोंच काफ़ी लंबी (5 से.मी.) होती है। लंबी चोंच की सहायता से यह कीचड़ में से विभिन्न प्रकार के कीड़े निकाल कर खाता है।

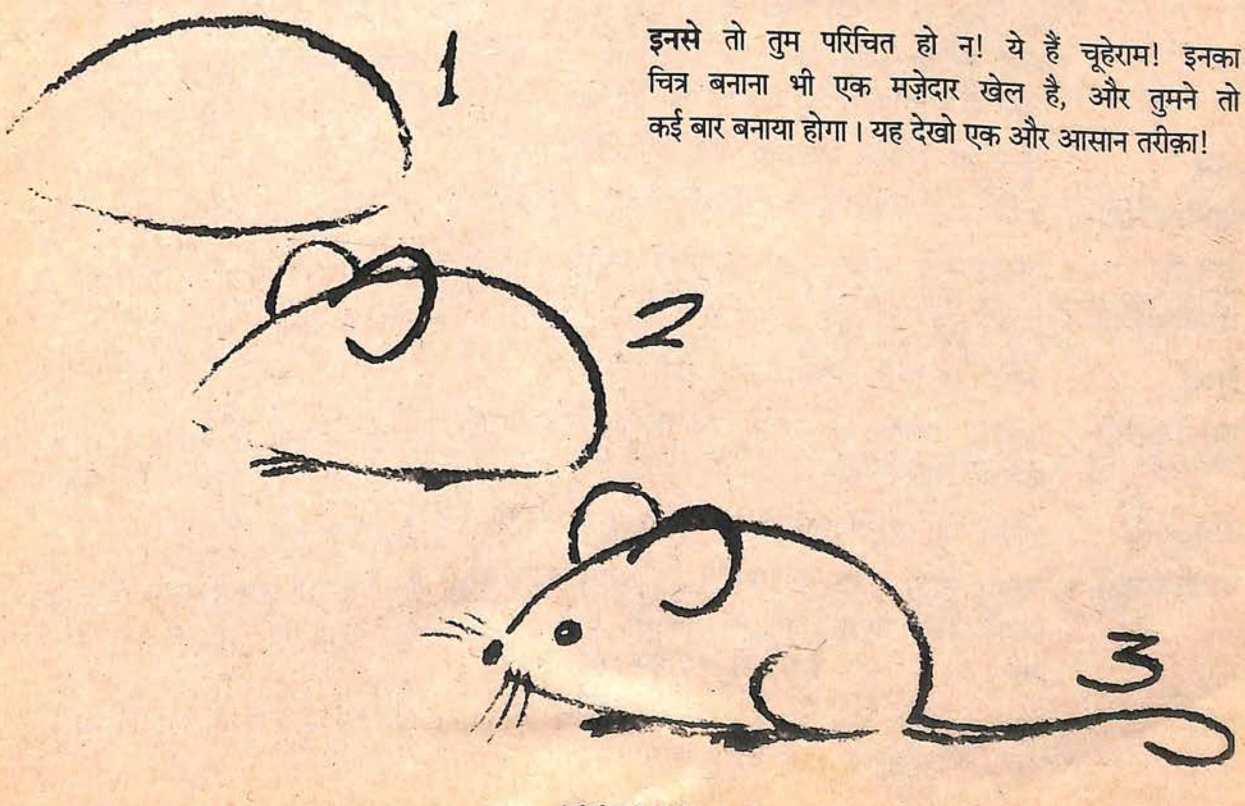
चहा के शरीर का निचला भाग सफ़ेद रंग का होता है और ऊपरी भाग गहरे भूरे रंग का। इस गहरे भूरे रंग पर काले और हल्के रंग की धारियां होती हैं। नर और मादा के रंग में कोई अंतर नहीं होता। शरीर के ऊपरी भाग के गहरे रंग एवं उस पर पड़ी हुई आड़ी-तिरछी धारियों के कारण पानी के किनारे भोजन ढूंढ़ते हुए चहा को देख पाना बड़ा मुश्किल होता है। जब मनुष्य की आहट पा कर यह दुबक जाता है तब तो यह बिलकुल ही दिखाई नहीं पड़ता। जब कोई मनुष्य इसके बहुत पास आ जाता है तब यह अचानक उड़ान भरता है और कर्कश आवाज़ के साथ आड़े-तिरछे ढंग से उड़ता हुआ ओझल हो जाता है। इसकी ऐसी उड़ान के कारण इस पर बंदूक से निशाना साध पाना भी कठिन होता है। इसे देख पाना और इस पर निशाना लगा पाना दोनों कठिन होने के कारण शिकारी इसे एक चुनौती मान कर इसका शिकार करना अधिक पसंद करते हैं और प्रति वर्ष हज़ारों चहे मारे जाते हैं।

ठंड के मौसम में चहा पूरे भारत में पाया जाता है और गर्मी का मौसम शुरु होते ही ये पक्षी उड़ कर कश्मीर और हिमालय के अन्य भागों में पहुंच जाते हैं। वहां दलदल वाले स्थानों में गड्ढा बना कर उसमें घास के तिनकों से घोंसला बनाया जाता है इसमें मादा 3-4 अंडे देती है।

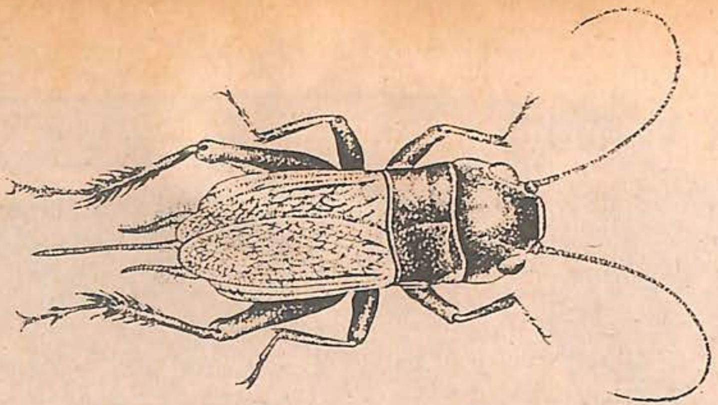
☐ अरविंद गुप्ते

(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी)





इनसे तो तुम परिचित हो न! ये हैं चूहेराम! इनका चित्र बनाना भी एक मज़ेदार खेल है, और तुमने तो कई बार बनाया होगा। यह देखो एक और आसान तरीक़ा!



तिलचट्टे का जीवन

तिलचट्टों को तो तुमने ज़रूर देखा होगा, अपने घर में ख़ासकर रसोई में! अगर न देखा हो तो अब देख लेना। अनु, सुब्बू और दुलारी पहले तो मधुमक्खियों के पीछे पड़े रहे और जब उनसे मन भर गया तो अब पड़े हैं तिलचट्टों के पीछे। तुम भी देखो क्या खोजबीन की है उन्होंने। मालीकाका तो मिले नहीं, तो उन्होंने मालीकाकी का ही 'इंटरव्यू' ले डाला!

अनु : मालीकाकी, मधुमक्खी की तरह क्या तिलचट्टा भी हमारा दोस्त है? उससे क्या फ़ायदे हैं हमें?

दुलारी : बताओ न! तिलचट्टा के बारे में बताओ कुछ। रसोईघर में तिलचट्टे बहुत घूमते रहते हैं।

मालीकाकी : तिलचट्टा नाम का जो जंतु है, यह खटमल की तरह मनुष्य का खून नहीं चूसता। बल्कि घर में पड़े जूठन को खाकर ज़िंदा रहता है। हमारी रसोई में ही नहीं, पांच सितारा होटलों में भी पाया जाता है। उसको मार भगाना उतना आसान नहीं है।

सुब्बू : ये नष्ट नहीं होते?

मालीकाकी : नष्ट क्यों नहीं होते? लेकिन यह जान लो कि प्रागैतिहासिक काल में, मानवजाति और डायनासॉर के उद्‌गम के पहले भी, तिलचट्टे सामान्य रूप से पृथ्वी पर पाए जाते थे। पेड़-पौधों के उद्‌गम के पहले भी। यानी, तीन करोड़ साल पहले, जब पृथ्वी विशाल फर्न (वर्णांग) के जंगलों से ढकी हुई थी—तब भी वे थे, और ज़मीन पर पड़े मृत खाद्य पदार्थों को खाकर ज़िंदा रहते थे। आज भी वे जंगलों में पाए जाते हैं। पेड़-पौधे तथा मरे हुए जानवरों के अवशेष को खाकर ज़िंदा रहते हैं।

अनु : जूठन के अलावा तिलचट्टा और क्या खाता है?

मालीकाकी : बहुत सारी चीज़ें। साबुन, काग़ज़, चमड़ा, गोंद, कपड़ा, रंग, बाल, नाखून आदि।

दुलारी : अगर मानलो दस दिन न उसे जूठन मिले और न यह सब जो तुमने गिनाए हैं—तब तो वह मर जाएगा न?

मालीकाकी : हरग़िज़ नहीं। वह इतनी आसानी से नहीं मरता। वह महीनों तक बिना खाए ज़िंदा रह सकता है।

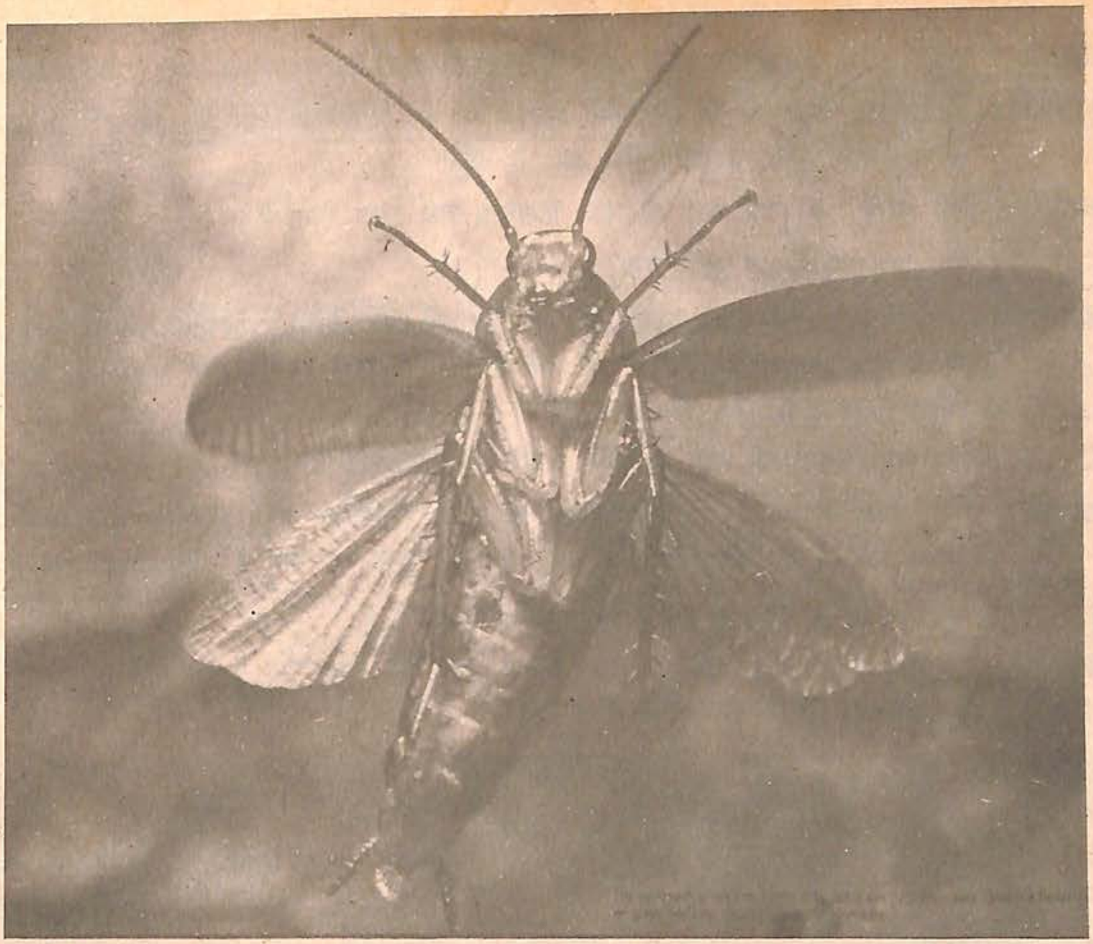
सुब्बू : करोड़ों साल से तिलचट्टा बचा कैसे रह गया?

मालीकाकी : इसलिए, क्योंकि वह अक्सर रात को ही निकलता है। वह उन जानवरों से बचकर रहता है, जो दिन में शिकार करते हैं।

अनु : लेकिन जो जानवर रात में शिकार करते हैं—उनसे कैसे बचता होगा?

मालीकाकी : जानवर इससे बचते हैं। क्योंकि यह दुर्गंध बहुत करता है। रात को शिकार करने वाले जानवर इसकी बदबू से दूर रहने की कोशिश करते हैं। छः टांगें होती हैं तिलचट्टे की। जिनके सहारे वह ख़तरे से भाग सकने में कामयाब होता है।

सुब्बू : हमने कई बार पांव से कुचलने की कोशिश की, मगर वह हर बार दबकर भी निकल गया। मरा नहीं। ऐसा कैसे होता है?



मालीकाकी : उसको मारना इतना आसान नहीं है। मार लगने के पहले ही वह खिसक लेता है।

दुलारी : कैसे उसे मालूम होता है कि मार लगनेवाली है। क्या वह मारने वाले पर निगाह रखता है?

मालीकाकी : असल में उसके शरीर के पिछले भाग में दो संवेदन ग्रंथियां होती हैं। वही उसको आगामी ख़तरों का संकेत देती है। ये ग्रंथियां इतनी संवेदनशील है कि वे तुम्हारे शरीर के कंपन को भी महसूस करके तिलचट्टे को चेतावनी दे सकती हैं। कभी-कभी तिलचट्टा उड़कर भी ख़तरे से दूर भाग जाता है।

अनु : तब तो मधुमक्खी से भी अक़्लमंद है तिलचट्टा!

मालीकाकी : क्यों नहीं। यदि तुम तिलचट्टे को छूते हो-तो वह न केवल तुम्हारी उंगली का स्पर्श महसूस करता है, बल्कि उसका स्वाद भी।

अनु : इसका मतलब यह कि उसके पास कमाल की नाक है, जो सूंघने के साथ-साथ स्वाद भी मालूम कर लेती है!

मालीकाकी : हां, बिल्कुल। उसके पास दो लंबे एंटीना होते हैं। वे दूर से किसी भी चीज़ को सूंघ सकते हैं।

सुब्बू : तब तो उसकी आंख भी कमाल की होगी?

मालीकाकी : उसकी आंखों की पकड़ भी तेज़ होती है। वे आकारों को पहचान सकती हैं। मामूली सी मामूली गति को भी देख सकती हैं।

दुलारी : इसका मतलब खटमल वग़ैरह उसे उल्लू नहीं बना सकते!

मालीकाकी : हां, और क्या। अरे, वह इतना होशियार होता है कि खाने के पहले चीज़ों को चख लेता है। अगर टेस्ट उसे अच्छा लगा तो खाता है, वरना छोड़ देता है।

सुब्बू : मां, उसकी चालाकी सब निकल जाएगी यदि बर्फ़ में डाल दो।

अनु : नहीं, गरम पानी उड़ेल दो। जैसे खटमल मर जाते हैं—उसी तरह वह भी मर जाएगा।

मालीकाकी : नहीं, न तो वह बर्फ़ में मरेगा, न ही गरम पानी डालने से मरेगा। तिलचट्टा इससे तो मर ही नहीं सकता।

दुलारी : अच्छा, यदि वैज्ञानिकों के साथ उसे अंतरिक्ष में भेज दिया जाए और वैज्ञानिक उसे छोड़कर वहां से चले आएं, तब तो मरेगा, कि तब भी नहीं?

मालीकाकी : नहीं मरेगा। हम जहां नहीं रह पाते, तिलचट्टा वहां ज़िंदा रहता है।

अनु : क्या अणु-बम से भी नहीं मरेगा?

मालीकाकी : अणु-बम भी उसके लिए कुछ नहीं है। फिर भी बम विस्फोट से नहीं बच पाएगा। इसे मैं मानती हूं। लेकिन अणु विकिरण से वह इतना नहीं डरता, क्योंकि वह मनुष्य से सैकड़ों गुना विकिरण सहन कर पाने की क्षमता रखता है।

सुब्बू : क्या मधुमक्खियों की तरह इनमें भी आपस में मेल रहता है?

मालीकाकी : नहीं, इनमें आपस में कोई सहकारिता नहीं होती। तिलचट्टा समूह में रहना पसंद नहीं करता। लेकिन दिन में कई तिलचिट्टे एक साथ, एक ही जगह पर सोते हैं। ऐसा देखा गया है।

दुलारी : क्या मक्खी के तरह वह भी सैकड़ों अंडे देती है?

मालीकाकी : तिलचट्टा की मादा मक्खी की तरह सैकड़ों अंडे नहीं देती। वह केवल दस-पंद्रह अंडे डालती है, और एक छोटी सी पोटली में जमा रखती है।





अनु : वह पोटली कहां रखती है?

मालीकाकी : अपने पेट में। वह अपने पेट में तब तक वह पोटली ढोती रहती है जब तक कि अंडे फूटने वाले नहीं हो जाते। जब वे फूटने को होते हैं, तब वह किसी सुरक्षित स्थान में पोटली जमा करती है। सुरक्षित स्थान जैसे नाले के पास।

दुलारी : वे खाते क्या हैं?

मालीकाकी : वही जो वयस्क तिलचट्टे खाते हैं।

अनु : उनके पंख कब निकलते हैं?

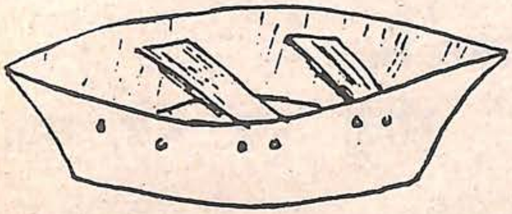
मालीकाकी : ज्यों-ज्यों वे बड़े होते हैं—वैसे-वैसे अपनी त्वचा झाड़ना शुरू करते हैं। अंतिम बार त्वचा झाड़ने पर उनके पंख निकल आते हैं।

सुब्बू : उनको बीमारी नहीं होती?

मालीकाकी : नहीं के बराबर समझो। क्योंकि तिलचट्टे के शरीर पर बहुत कम रोगाणु टिक पाते हैं।

सही आकार खोजो

तुमने कभी नाव में नदी या तालाब की सैर की है? काग़ज़ की नाव तो ज़रूर बनाई होगी! कैसी होती है नाव? क्या कभी नाव की आकृति पर ग़ौर किया है?

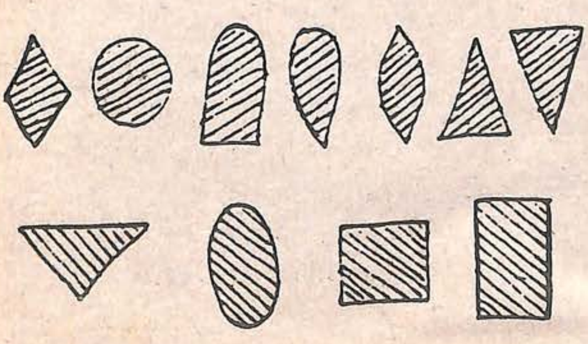


नाव का तल किस आकार का होता है? कुछ ऐसा—

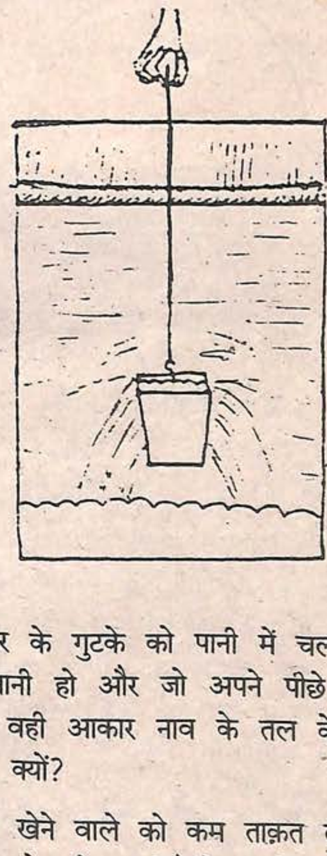


लेकिन नाव का तल ऐसा ही क्यों होता है? किसी और आकार का क्यों नहीं?

चलो, प्रयोग से पता लगाते हैं। अलग-अलग आकार के तल बनाकर पानी में तैरा कर देखते हैं। इसके लिए लकड़ी के गुटकों की ज़रूरत पड़ेगी। लकड़ी थोड़ी नरम लेना जिसे आसानी से काट सको। गुटकों को अलग-अलग आकार में काट लो।



हर गुटके के सिर पर एक हुक (परदों की डोरी या तस्वीरों के फ्रेम में लगाने वाले) फिट कर लो। हुक न मिले तो मोटे तार के एक टुकड़े को प्रश्न चिन्ह (?) की आकृति में मोड़ कर गुटके में ठोक लो। हुक से एक डोरा बांध लो। अब हर गुटके को बारी-बारी से पानी में तैराओ। यदि तुम्हारे आस-पास कोई ताल-तलैया न हो तो पानी से भरी टंकी या चौड़े मुंह की नांद का उपयोग कर सकते हो। डोरा पकड़ कर गुटके को तेज़ी से पानी में खींचो। ध्यान से देखो, किस आकार का गुटका सबसे आसानी से पानी में आगे बढ़ता है और उसके पीछे कितनी लहर बनती है।



जिस आकार के गुटके को पानी में चलने में सबसे ज़्यादा आसानी हो और जो अपने पीछे सबसे कम लहर छोड़े वही आकार नाव के तल के लिए सही होगा। ऐसा क्यों?

क्योंकि नाव खेने वाले को कम ताक़त लगानी पड़ेगी और यदि नाव मोटर से चलती है तो कम ईंधन खर्च होगा।

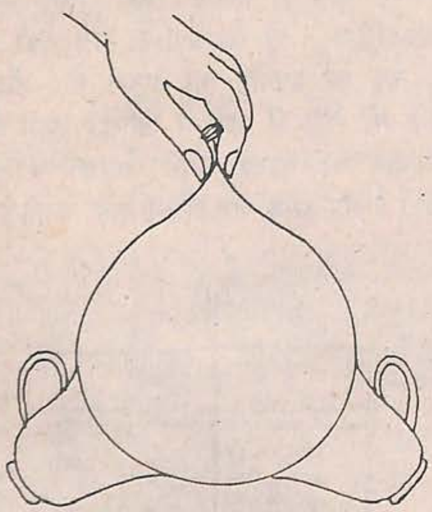
तो अब तुम्हें नाव के तल का सबसे उपयुक्त आकार खोजना है!

☐ स्मिता अग्रवाल

गुब्बारे से लटकाओ प्याले

क्या तुम दो चाय के प्यालों को एक गुब्बारे के सहारे लटका सकते हो? पर शर्त यह है कि तुम प्यालों को गुब्बारे से बांध नहीं सकते। आओ कोशिश करके देखते हैं।

एक गुब्बारे को दो प्यालों के बीच में रखकर फुलाओ। जब गुब्बारा पूरी तरह फूल जाए और प्यालों के मुंह पूरी तरह बंद हो जाएं तो गुब्बारे को धीरे-धीरे ऊपर उठाओ। देखो प्याले भी साथ-साथ ऊपर उठ रहे हैं या नहीं?



वास्तव में जब हम गुब्बारे को फुलाते हैं तो इसके अंदर की हवा प्यालों की भीतरी दीवार पर दबाव डालती है। इससे गुब्बारे और प्यालों में घर्षण बढ़ जाता है और इसी घर्षण की वजह से प्याले गुब्बारे से चिपके रहते हैं।

अब यही प्रयोग प्यालों को साबुन के पानी में भिगोकर करो। ध्यान रखना, अब प्याले गिर सकते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि साबुन-पानी घर्षण को कम कर देता है। इसीलिए साबुन के पानी पर पैर पड़ जाने पर हम फिसलकर गिर पड़ते हैं। देखो, कहीं तुम्हारे प्याले गिर तो नहीं पड़े।

बर्फ़ को धागे से लटकाओ

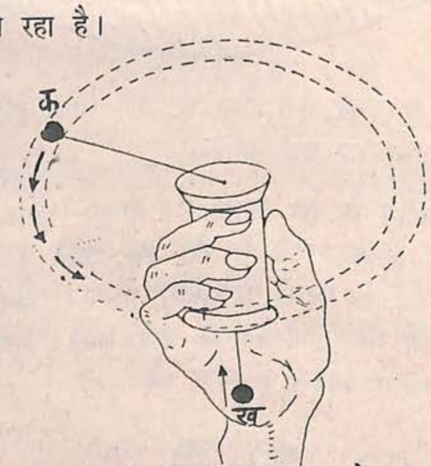
शीर्षक पढ़कर तुम्हें लगा होगा कि भला इसमें क्या मुश्किल बात है! शायद तुम ठीक सोच रहे हो। पर यह शर्त तो पढ़ो कि धागा बांधना नहीं है। खा गए न चक्कर...!

आओ करके देखते हैं। दो बर्फ़ के टुकड़े लो और उनके बीच एक धागा रखो। अब ऊपर वाले टुकड़े को थोड़ी देर के लिए हाथ से दबाकर रखो। फिर हाथ हटाकर देखो, बर्फ़ के दोनों टुकड़े आपस में जुड़ गए होंगे। अब तुम दोनों टुकड़ों को आसानी से, बीच में फंसे हुए धागे से लटका सकते हो। पर ऐसा होता क्यों है?

यह तो हम जानते ही हैं कि बर्फ़ का तापमान 0° सेल्शियस होता है यह पानी का जमनांक भी है। पर दबाव के साथ जमनांक भी घटता है। जब हम बर्फ़ के टुकड़ों के ऊपर दबाव डालते हैं तो उनके बीच की सतह पिघल जाती है। फिर जब हम दबाव हटा लेते हैं तो बर्फ़ कें दोनों टुकड़े धागे समेत जुड़ जाते हैं।

पत्थर बिना सीढ़ी ऊपर चढ़े, क्यों?

धागा लपेटने की लकड़ी की एक रील लो। एक मज़बूत धागा उसमें पिरोकर उसके दोनों ओर एक-एक पत्थर बांध दो। अब रील को चित्र में दिखाए गए तरीके से पकड़कर ऊपर वाले पत्थर को ज़ोर-ज़ोर से घुमाओ। थोड़ी देर में तुम देखोगे कि नीचे लटका हुआ पत्थर धीरे-धीरे ऊपर की ओर चढ़ रहा है। सोचो ऐसा क्यों हो रहा है।



जब हम **क** वजन या पत्थर को घुमाते हैं तो धागे से होते हुए एक बल उस पर काम करता है जो उसे घूमते रहने में सक्षम बनाता है। फलस्वरूप पत्थर **क** का एक बराबर, पर विपरीत दिशा में कार्य करने वाला बल, धागे से होते हुए पत्थर **ख** पर कार्य करता है। इसी बल की वजह से पत्थर **ख** ऊपर की ओर (**क** की ओर) खिंचता है।

(क्वेस्ट कार्यक्रम से साभार)

चेंद्रू और बाघ : एक अनोखी कहानी

अपने देश के लगभग मध्य में जंगलों के बीच एक गांव है—गढ़ बंगाल! बूझो तो भला कौन से प्रदेश के, कौन से जिले में है यह गांव? नहीं सूझ रहा—चलो हम ही बताए देते हैं, जिला है बस्तर, और प्रदेश है मध्य यानी मध्यप्रदेश! बस्तर मध्यप्रदेश का एक आदिवासी बहुल जिला है। बस्तर में कोइतोर जनजाति मुख्य रूप से निवास करती है। कोइतोर जनजाति की पांच उपशाखाएं हैं—राजगोंड़, मुरिया, अबुझमाड़िया, दंडामी माड़िया और दोर्ला। इन सबकी अपनी-अपनी संस्कृति, रीतिरिवाज और अपना जीने का तरीका है। बहरहाल... हम बात कर रहे थे गढ़ बंगाल की।

गढ़ बंगाल में मुरिया जनजाति रहती है। मुरिया जनजाति के गांव-जंगलों के बीच पहाड़ों और नदियों के पास बसे हैं। इनके घर आमतौर पर मिट्टी व बांस से बने होते हैं।

मुरिया लोग मुख्य रूप से धान की खेती करते हैं। खेती वर्ष में एक बार बरसात के दिनों में होती है। धान की खेती ज़मीन जोतकर की जाती है और छिंटा और रोपा दोनों तरह से होती है। इसके अलावा उड़द, मड़आ, मक्का और शाक भाजी भी पैदा करते हैं। जंगल से मिलने वाली चीज़ें जैसे महुआ बीज, साल बीज, जंगली खजूर, आम, इमली, चिरौंजी दाना, बीड़ी पत्ता आदि भी बेचकर ये अपना गुजारा करते हैं। कभी-कभार जंगल जाकर हिरण या जंगली सूअर आदि का शिकार भी कर लेते हैं।



मुरिया लोग मानते हैं कि उनका इलाक़ा दुनिया भर में सबसे सुंदर और हरा-भरा है। दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों, जिन्हें वे नीली पहाड़ियां कहते हैं, के बीच अपना जीवन हंसते, गाते, नाचते बिताते हैं।

बाघ से तो तुम्हें भी डर लगता है न! नहीं लगता तो कोई बात नहीं! अब जंगलों के बीच रहने वाले लोगों को तो हमेशा ही डर बना रहता है बाघ का - चाहे मछली और जानवरों का शिकार करने वाले बहादुर मर्द हों, या जंगल से लकड़ी, फल और कंद-मूल इकट्ठा करने वाली जीवट औरतें हों या फिर दिन भर नदी-तलाबों में नहाते, ढोरों की रखवाली करते और पेड़ों पर उधम मचाते शैतान बच्चे ही क्यों न हों। डरने के बावजूद मुरिया लोगों के लिए बाघ एक ऐसा जानवर है जिसकी वे इज़्ज़त करते हैं, आदर की नजरों से देखते हैं। उनका मानना है कि सुनहरी रंग वाला बाघ सूर्य से भी सुंदर है, सूर्य से चमकती हुई बांस की पत्तियों से भी सुंदर है। बाघ उनका दुश्मन तो है—पर प्यारा दुश्मन!

इसी गढ़ बंगाल में आज से कोई तीस साल पहले एक ऐसी कहानी बनी जो न केवल मज़ेदार है वरन् बिरली भी। इस कहानी को **एस्ट्रिड बर्गमेन** नामक एक स्वीडिश महिला सामने लाईं। वे खुद बस्तर गईं और कहानी के 'नायकों' से मिलीं। इस कहानी में जो चित्र तुम देखोगे वे भी एस्ट्रिड बर्गमेन ने ही खींचे हैं। उन्होंने कहानी और चित्रों को एक किताब के रूप में—चेंद्रू दी बॉय एंड दी टायगर - नाम से, प्रकाशित किया था। चित्र तथा कहानी हम इसी किताब से साभार दे रहे हैं। तो आओ चलते हैं तीस साल पुराने गढ़ बंगाल में।

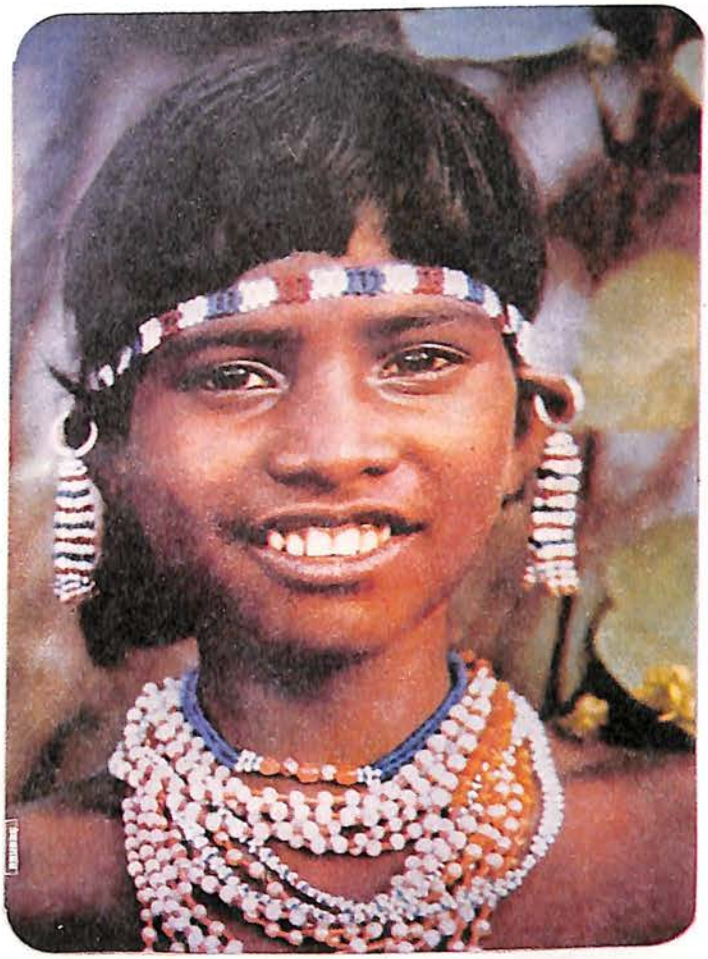
एक चेंद्रू है। है तो अभी छोटा, लेकिन शिकारी की भांति ताकतवर और लचीले बदनवाला। शिकार उसका प्रिय खेल है। अपनी गुलेल से वह तीस क़दम दूर से भी किसी पक्षी को निशाना बना सकता है। साल के पेड़ पर चढ़ना और उतरना तो जैसे बाएं हाथ का काम है उसका। गांव के आसपास मंडराने वाले जंगली सूअरों को दूर-दूर तक खदेड़ना और नदी में नहाते हुए मछली पकड़ना भी उसे खूब भाता है।

काले लंबे बाल और उसकी भूरी आंखें उसके बदन के रंग जैसी हैं। उसके चेहरे पर सफ़ेद मोती जैसे दांत सदा हंसने के लिए तैयार रहते हैं। चेंद्रू नाचने और गाने में भी माहिर है।

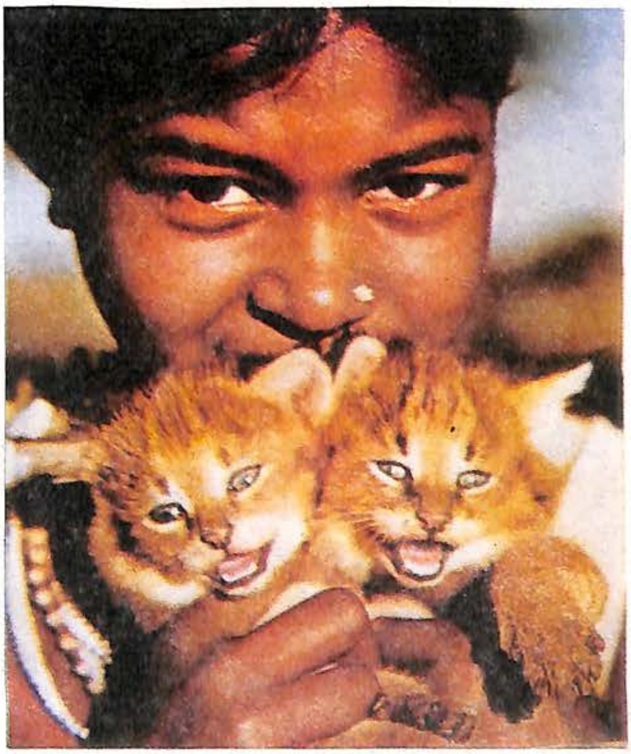
बाघ के बारे में चेंद्रू भी जानता है और बाघ की सुंदरता भी उसे भाती है। जब वह छोटा था, और भी छोटा तो एक दिन दोपहर में जब उसके परिवार के और लोग सो रहे थे चेंद्रू जंगल की ओर चला गया। चेंद्रू नदी किनारे एक केंकड़े को लकड़ी से उलट-पुलट कर रहा था कि अचानक आसपास के पेड़ों पर बैठे बंदरों ने चीखना शुरू कर दिया। चेंद्रू तुरंत भूरे तीर के माफ़िक़ फुर्ती से पेड़ पर चढ़ गया।

नीचे बांस की झाड़ियां हिलने लगीं और तभी उन झाड़ियों में से सोने जैसे बाघ का सिर बाहर निकला। बाघ रेत में बने चेंद्रू के नन्हे क़दमों के निशान पर चलता गया। फिर थोड़ी देर बाद बाघ जंगल में ओझल हो गया। उस दिन चेंद्रू ने पहली बार बाघ देखा। अब चेंद्रू के लिए बाघ ही सबसे सुंदर चीज़ बन गई थी, जंगल में ही नहीं, सारी दुनिया में!

आओ आगे की कहानी चित्रों के साथ-साथ पढ़ते हैं।



यही है चेंद्रू। कितने साल का होगा? उसे भी याद नहीं। हां, इतना मालूम है जिस रात वह पैदा हुआ था, उसी रात बाघ ने गांव के मुखिया की दो भैंस मार गिराई थीं।



और ये है चेंद्रू की बड़ी बहन अस्सज। उसकी गोद में जो बिल्ली के बच्चे दिख रहे हैं, वे उसे जंगल में मिले थे। अस्सज उन्हें लेआई और मां की तरह पालती है।



चेंद्रू के पिता एक कुशल शिकारी हैं। वे तेज़ी से भागते हिरण पर भी दूर से एकदम सही निशाना लगा सकते हैं। चेंद्रू को उनके साथ शिकार पर जाना अच्छा लगता है।

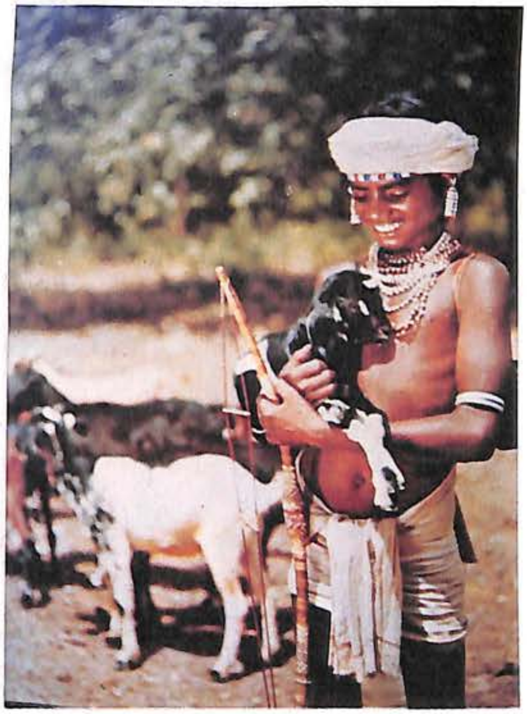
एक दिन चेंद्रू के पिता और दादा नीली पहाड़ियों से शिकार करके लौटे। उनके साथ एक बड़ी-सी टोकरी थी! उस टोकरी में निकला एक बाघ का बच्चा! चेंद्रू को तो बहुत ख़ुशी हुई। उसने तुरंत दोस्ती गांठ ली बाघ से। नाम रखा ताम्बू। ताम्बू डलिया से निकलकर ज़मीन पर जा लेटा, शायद भूख लगी है उसे। तभी अस्सज को भी याद आया। वह भागी-भागी गई और दूध ले आई।





ताम्बू ने दूध पिया और फिर चेंद्रू के साथ नाचने का अभ्यास।

अब चेंद्रू जहां भी जाता ताम्बू को अपने साथ ले जाता। चेंद्रू ताम्बू का साथ पाकर अपने को और अधिक बहादुर तथा सुरक्षित समझने लगा। चेंद्रू एक असली शिकारी की तरह अपने तीर-कमान के साथ रहता। चेंद्रू को मानो सारा जंगल बदला हुआ दिखाई देने लगा। गिलहरी, बंदर, छिपकलियां, सांप सभी दोनों को देखते ही खिसक जाते।





गर्मी से बचने के लिए चेंद्रू ताम्बू को नदी ले जाता और फिर वहां शुरू होती धींगा-मस्ती। चेंद्रू वहां ताम्बू को केंकड़े, मछली, नीलकंठ और न जाने किन-किन के बारे में बताता। चेंद्रू के देखते-देखते नीलकंठ पानी में डुबकी लगाता और चोंच में चांदी के टुकड़े जैसी मछली दबा के उड़ जाता।

चेंद्रू के पिता बांस की टोकरियों से मछलियां पकड़ते हैं और अंगारों पर भूंजते हैं। लेकिन नदी में इससे भी बड़ी मछलियां हैं—कुछ रहस्यमय-जिनके मुंह से



दो लंबी पूंछनुमा मूंछ निकली रहती है। और यह मछली कभी-भी बांस की टोकरी में नहीं फंसती। अपने दादा से चेंद्रू जब इन मछलियों की कहानी सुनता है, तो उसकी आंखों में मछलियां और भी बड़ी हो जाती हैं।

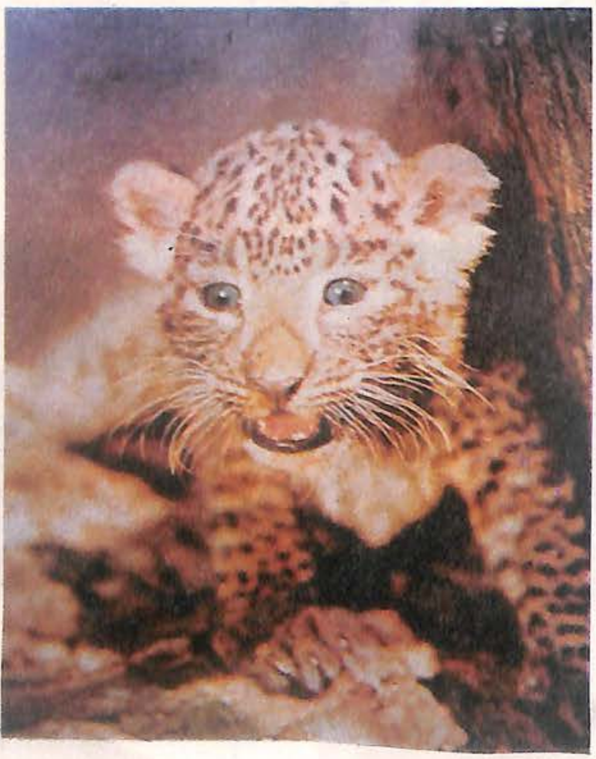
और एक दिन जब गले में मोतियों की माला पहने बालों में कौड़ियां गूंथे, अस्सज और उसकी सहेली नदी में नहा-धो रही थीं... तो चेंद्रू अपने धनुष पर बाण चढ़ाए पानी के नीचे चलती मछलियों पर निशाना लगा रहा था।



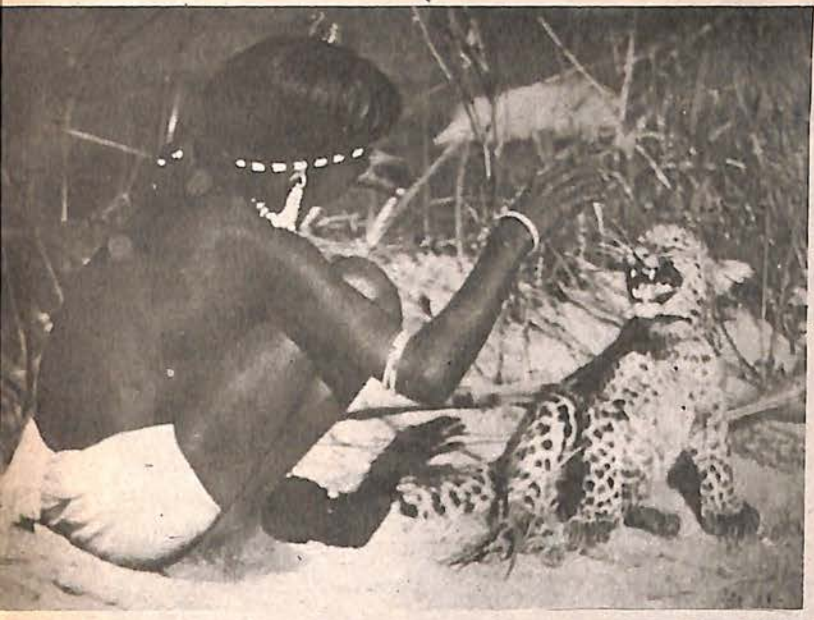
थोड़ी ही देर बाद चेंद्रू ने खुश होकर आवाज़ लगाई... देखो तो! चेंद्रू के तीर में फंसी थी एक मछली... शायद उसके दादा की कहानी वाली रहस्यमय मछली!

मछली को तुरंत खाना है—खाने वाले चार-दो लड़कियां, एक शिकारी और शिकारी का दोस्त ताम्बू! भूंजने की तैयारी हों रही है!





चेंद्रू और ताम्बू ऐसे ही रोज़-रोज़ नए-नए किस्से बनाते रहे। एक दिन जंगल में घूमते-घूमते दोनों बड़ी दूर निकल गए। तभी चेंद्रू ने देखा दूर से उसे दो आंखे घूर रही हैं। ध्यान से देखने पर पता चला यह आंखें थीं, एक तेंदुए के बच्चे की!



चेंद्रू का डर खुशी में बदल गया, चलो एक और दोस्त मिला। एक बढ़िया शिकारी भला तुम से कैसे डर सकता है, कहता हुआ चेंद्रू तेंदुए को पुचकारने लगा। तेंदुआ था कि लगा गुर्राने। गुर्राने की आवाज़ सुनकर थोड़ी दूर बैठा ताम्बू भी गुर्राने लगा।



पर ताम्बू की नज़रें टिकी थीं पेड़ पर। पेड़ की एक ऊंची डगाल पर से भी अब गुर्राने की आवाज़ आने लगी। चेंद्रू ने नज़र घुमाई, तो डर के मारे ठंडा हो गया। पेड़ पर तेंदुए की मां थी। चेंद्रू को मालूम था कि अब वह कुछ नहीं कर सकता — चाहे एक बाघ का बच्चा उसके साथ क्यों न हो!



बस एक ही रास्ता बचा था.... भागो सिर पर पैर रखकर!



रात को कभी-कभी चेंद्रू और अस्सज दादा से कहानियां सुनते!

और जिस रात कहानियां नहीं सुननी होतीं, उस रात जाते घोटुल। चेंद्रू के साथ ताम्बू भी जाता घोटुल!



घोटुल क्या है? घोटुल मुरिया युवाओं की संगठन व्यवस्था का नाम है।

घोटुल में गांव के हर अविवाहित निवासी को शामिल होना अनिवार्य होता है। जब मुरिया बालक अपने मां-बाप के बिना रह सकने लायक हो जाते हैं (आमतौर पर आठ से दस वर्ष की अवस्था से) तो उन्हें घोटुल भेजा जाता है। अपने बच्चे को घोटुल भेजने से इंकार करने वाले घर का घोटुल प्रशासन बहिष्कार कर देता है।

घोटुल में लोग अपने समाज, अर्थ व्यवस्था, रीति-रिवाज़, धर्म और प्रशासन आदि के बारे में जानते-समझते हैं।

घोटुल आमतौर पर गांव के बाहर, गांव की सीमा पर स्थित होता है। इस कारण उस पर गांव की सुरक्षा का भार भी होता है। घोटुल बनावट में बहुत ही सामान्य, पर आकर्षक होता है। घोटुल की दीवारों पर तरह-तरह के चित्र आदि बने होते हैं। दीवार के अलावा लकड़ी के खंभों तथा दरवाज़ों पर भी चित्र बने होते हैं।

घोटुल की अपनी प्रशासन व्यवस्था होती है। उसका एक सिरेदार भी होता है। घोटुल के अपने नियम आदि होते हैं, जिनका पालन नहीं करने पर सज़ा भी दी जाती है। ये नियम घोटुल में रहने, व्यवहार करने के तौर-तरीकों के संबंध में भी होते हैं और इनका कड़ाई से पालन करना होता है।

घोटुल में रात के सात-आठ बजे से सदस्य आना शुरू कर देते हैं सभी लोग एक साथ बैठकर आपस में बातचीत करते हैं, गाना गाते हैं और कहानी सुनाते हैं। अगर सबकी इच्छा हुई तो नृत्य भी होते हैं। अंत में सभी एक दूसरे से जोहार (नमस्कार) करके सो जाते हैं।

घोटुल मुरिया युवक-युवतियों के लिए एक-दूसरे को समझने का भी एक माध्यम है। जो युवक-युवती एक दूसरे को पसंद करते हैं घोटुल उनका विवाह भी करवाता है। घोटुल से विदाई विवाह होने पर होती है। विवाहित व्यक्ति फिर घोटुल में नहीं रह सकता। हां, उसके कार्यक्रमों में ज़रूर शामिल हो सकता है।

घोटुल अपने गांव के प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक समारोह/आयोजन जैसे विवाह, सामूहिक उत्सव, मृत्यु आदि अवसरों पर मुख्य भूमिका निभाता है। इन सबमें व्यवस्था की सारी ज़िम्मेदारी घोटुल सदस्यों की होती है।

घोटुल का उपयोग विवाह या अन्य अवसरों पर अतिथि







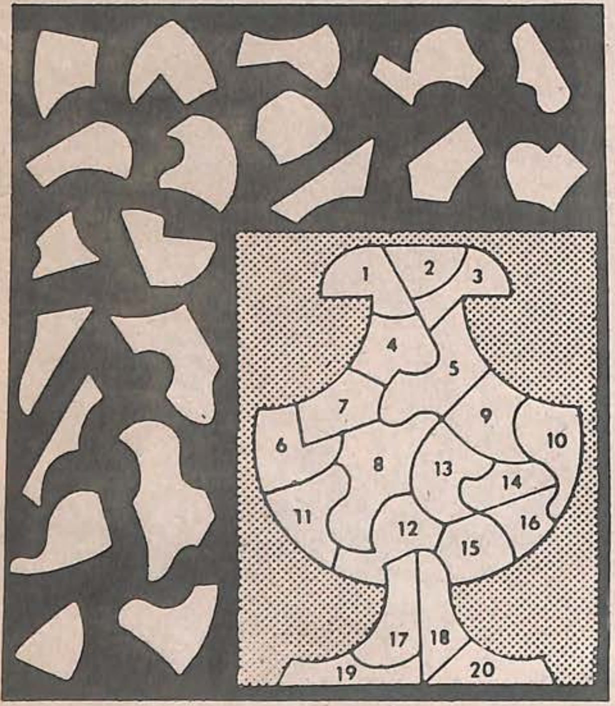
गृह के रूप में भी किया जाता है।

कुल मिलाकर घोटुल मुरिया समाज व्यवस्था की रीढ़ है।

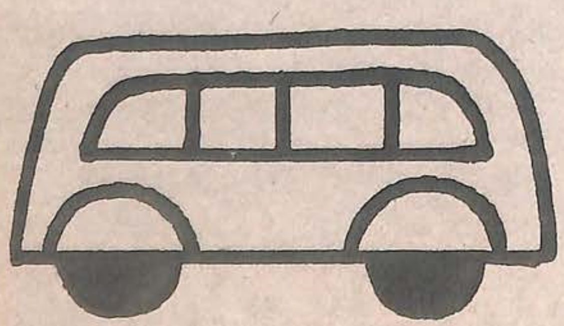
चेंद्रू इसी घोटुल व्यवस्था में पलकर आज मुरिया समाज का एक वयस्क व्यक्ति बन चुका है।



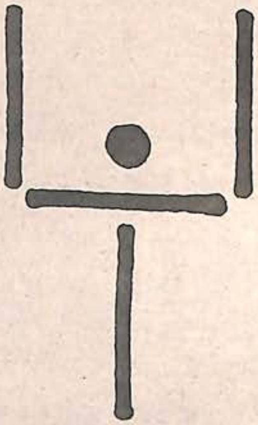
माथापच्ची



यहां दिए बर्तन के चित्र में उसके कुछ टुकड़े किए गए हैं उन पर नंबर भी डाले गए हैं। साथ के चित्र में ये टुकड़े अलग-अलग बिखरे हैं। क्या तुम पहचान सकते हो! पहचानो और उन पर नंबर डालो!



बता सकते हो, बस किस दिशा में जा रही है—दाएं या बाएं? अपने उत्तर का आधार भी बताना है।



माचिस की चार तीलियों से यह एक गिलास की आकृति बनी है। क्या तुम सिर्फ़ दो तीलियों का स्थान बदलकर गिलास में रखी गेंद को बाहर कर सकते हो? पर ध्यान रहे गेंद को छूना नहीं है और हमें गिलास की आकृति भी ज्यों की त्यों चाहिए।



ये साहब हजामत बनवाने गए। संयोग से वहां एक फोटोग्राफर भी पहुंच गए। फोटोग्राफर ने साहब की चार फोटो खींच डालीं, जो तुम देख रहे हो। पर उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि इन तस्वीरों का क्रम क्या है यानि कौन-सी पहली है, कौन-सी दूसरी, तीसरी और चौथी! तुम कुछ मदद कर सकते हो! कारण भी सोचना!

जिसकी नाक हो इतनी लंबी
सर से लेकर पांव तलक
कान सूप-से, आंख जरा-सी
चलता है वह धमक-धमक
जिसको देख सभी खुश होते
बतलाओ उसको क्या कहते?

●

कूबड़ टेढ़ी, गरदन टेढ़ी
टेढ़े उसके पांव,
बंडी पूंछ लिए फिरता है
खड़ा बबूल की छांव
जहाज़ कहाए रेगिस्तानी
बतलाओ है कौन सा प्राणी?

□ रमेश दवे

●

कुछ कबूतर उड़ते हुए आए और एक वटवृक्ष के एक-एक पत्ते पर एक-एक के हिसाब से बैठ गए। फिर भी एक कबूतर उड़ता रहा। सभी ने सोचा इसे भी बैठाना चाहिए। अतः वापस उड़े। इस बार वे एक पत्ते पर दो के हिसाब से बैठे तो एक पत्ता खाली रह गया। बताओ कितने पत्ते थे और कितने कबूतर?

एक सुपारी पर एक वार करने से दो टुकड़े होते हैं तो तीन वार में कितने टुकड़े होंगे! ध्यान रहे एक वार में दो टुकड़े ही होंगे!

□ चंद्रकिरण पोरवाल, तिलोनिया

किस व्यक्ति के सामने वीर से वीर पुरूष को अपना सिर झुकाना पड़ता है?

एक मेज़ पर, एक प्लेट में तीन सेब रखे हैं और खाने वाले चार हैं। अब सभी एक-एक सेब चाहते हैं। भला यह कैसे संभव है? सेब को काटा नहीं जा सकता।

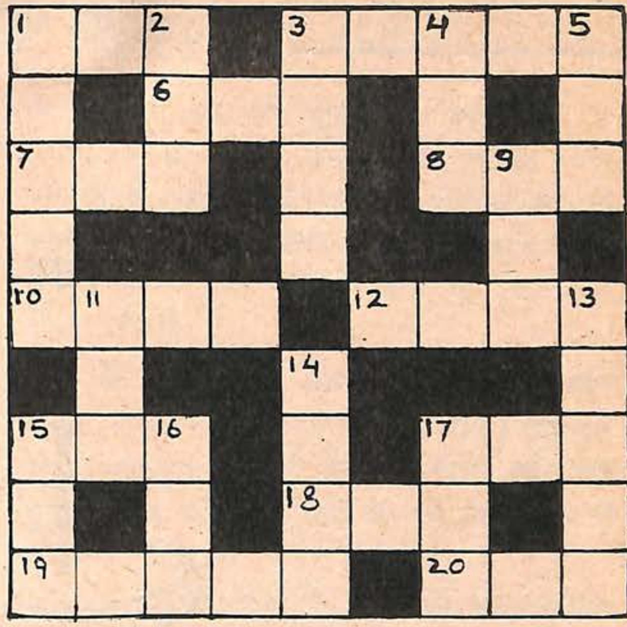
□ मुबीन अहमद, भोपाल

वर्ग पहेली - 26 : हल

बाएं से दाएं : 1. अकल 4. दशक 6. पदक 7. तरल 8. बलियापाल 10. चासनाला 12. आजकल 15. ख़बरदार 17. महक 19. दरोगा 20. नारद 21. नाहक।

ऊपर से नीचे : 1. अजीत 2. लपलपाना 3. अकबर 4. दरिया 5. कमल 9. पालक 11. सबब 13. जगमगाना 14. सिरदर्द 15. ख़ज़ाना 18. कटक।

वर्ग पहेली - 27



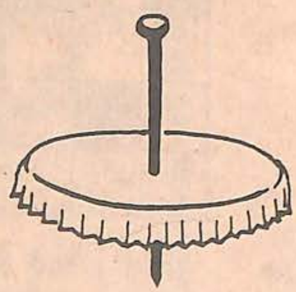
संकेत : बाएं से दाएं

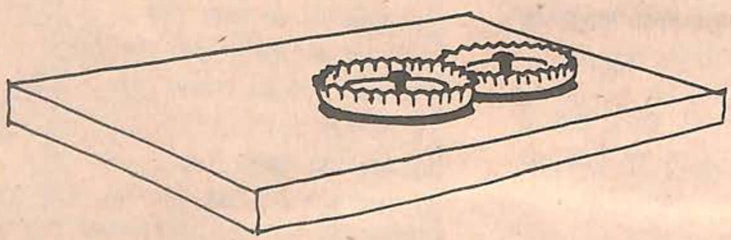
1. आज न कल में पिता (3)
3. समीकरणों का शास्त्र (5)
6. मजार की तर्ज पर एक वृक्ष (3)
7. तट पर गड़बड़ किराना (3)
8. मानचित्र (3)
10. नया नया मक्खन (4)
12. चार कवि मिल कर बनाएं एक सोचने वाला (4)
15. आमदनी नहीं, पर आवेशित कण (3)
17. बेहद के पर्याय के लिए अनिल, सीमा और महमूद के सिर जोड़ दो (3)
18. लालचंद के अंदर का लोभ (3)
19. बेरोजगारों की रास्ते वाली उपमा (5)
20. चरना उल्टा-सीधा या बनाना (3)

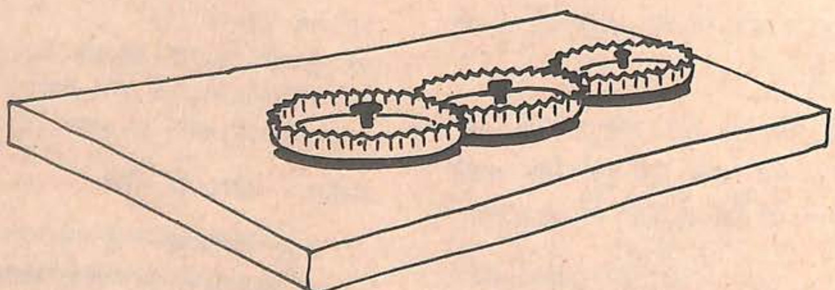
संकेत : ऊपर से नीचे

1. शंकर का फ़िल्मी साथी (5)
2. चारदीवारी ऊपर छत, पहला व्यंजन मरा (3)
3. अकबर के नवरत्नों में एक (4)
4. हाथी के दो सिर, नहीं, आकाश (3)
5. मजमा या खेल... (3)
9. सावन भादों के बाद (3)
11. छल्ला समय की तर्ज पर (3)
13. मसा के आसपास कसना या छटपटाना (5)
14. बातचीत (4)
15. सवा आम में उल्टा घर (3)
16. रोज़मर्रा का लवण (3)
17. न चलने वाला (3)

गेयर बनाओ







- सोडावाटर या ठंडे पेय की बोतलों के कुछ ढक्कन कबाड़ो।
- कील से ढक्कनों के बीच में एक छोटा-सा छेद बनाओ।
- अब दो ढक्कनों को लकड़ी के एक पटिए पर सटाकर रखो ताकि उनके दांते आपस में फंस जाएं। अब ढक्कनों के बीच छेदों में एक छोटी कील ठोक दो, जिससे ढक्कन आसानी से घूम सकें।
- अब एक ढक्कन को घुमाओ और देखो कि दूसरा ढक्कन किस दिशा में घूमता है!
- एक तीसरा ढक्कन और फिट करो और देखो कि तीनों ढक्कन किन दिशाओं में घूमते हैं।

अरविंद गुप्ता

भूगर्भ की यात्रा

अब तक तुमने पढ़ा

प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक को एक पुरानी किताब मिली। वे उस किताब का महत्व अपने सहायक को समझा रहे थे। उसी समय एक गंदा और पुराना पर्चा उस किताब से निकल कर ज़मीन पर आ गिरा। उस पर्चे पर कोई संदेश लिखा था। वह संदेश प्रोफ़ेसर तथा उनके सहायक के लिए एक पहेली बन गया था। दोनों ही परेशान थे। अब आगे पढ़ो...!

तीन घंटे तक चाचा जी बिना बोले या हाथ उठाए ही हज़ारों प्रयत्न करते रहे। मुझे लगा कि इस तरीके से रहस्य नहीं जान सकेंगे।

समय बीतता गया और रात आई। शोर-गुल से भरी सड़कों पर अब सन्नाटा छा गया था, लेकिन चाचाजी अब भी अपने काम में व्यस्त थे। यहां तक कि मार्था की आवाज़ भी वे न सुन सके जो उनसे भोजन कर लेने के लिए कहने आई थी। वह बेचारी बिना उत्तर पाए ही लौट गई थी। मैं जितनी देर जाग सकता था, जागता रहा। अब मैं थकावट के मारे अपनी कुर्सी पर ही सो गया। चाचाजी इस समय भी अपने काम में जुटे हुए थे।

दूसरी सुबह जब मैं सोकर उठा तब भी प्रोफ़ेसर अपने काम में व्यस्त थे। उनकी लाल आंखें और सफ़ेद चेहरे ने मुझे बता दिया कि वे असंभव को संभव बना देने के लिए संघर्ष किए जा रहे थे।

वास्तव मे मुझे उनके लिए दुःख हुआ। वे बेचारे अपने काम में इतने अधिक लीन थे कि गुस्सा हो जाना भी भूल गए थे। मुझे डर लगने लगा कि कहीं उनका गुस्सा, जिसे वे अभी भूले हुए थे, एकाएक ज्वालामुखी की तरह ही फट न पड़े।

उनकी सारी परेशानी मैं केवल एक ही शब्द या हरकत से दूर कर सकता था, तो भी मैंने ऐसा नहीं किया। इसका कारण भी साफ़ था। चाचा जी की भलाई के लिए ही मैं चुप था।

'नहीं नहीं,' मैंने सोचा, 'मैं एक शब्द भी न बोलूंगा। मैं जानता हूं कि वे चाहेंगे। वे अपने जीवन के किसी भी ख़तरे की परवाह न करेंगे। मैं इस रहस्य को रहस्य ही बना रहने दूंगा। यांत्रा उनकी जान ले लेगी। उन्हें ही अनुमान करने दूं यदि वे कर पाए। चाहे जो हो, यदि वे इसे जान लेंगे तो मेरा कोई भी कसूर न होगा।' यह सोचकर मैं प्रतीक्षा करने लगा। लेकिन कुछ ही समय बाद जो घटना घटी उसकी मुझे आशा नहीं थी।

रोज़ की ही तरह जब मार्था बाजार से सामान ख़रीदने जाने लगी तो उसने दरवाज़ा बंद पाया। बाहरवाले दरवाज़े की कुंजी भी नहीं थी। कुंजी किसने ली? कल रात को जब चाचाजी घूमकर आए थे तब उन्होंने ही ली होगी कुंजी।

'लेकिन किसलिए ली होगी? क्या धोखे से लिए चले गए या हमें भी भूखा रखना चाहते थे?' हम बहुत ही भूखे थे। फिर भी मैंने भूख का बहादुरी से सामना करने की सोची। मार्था को यह विचार बिलकुल नहीं जंचा। वह बहुत नाराज़ दिखाई देती थी।

लगभग बारह बजे हम वास्तव ही में भूख से बिलबिला उठे। मार्था ने रात का बचा हुआ सारा खाना खा डाला। अब घर में कुछ भी नहीं था। मैं भी बहादुर बनने से बाज़ आ चुका था।

दो बज चुके थे। हम खाने की प्रतीक्षा में बेवकूफ़ों जैसे बैठे हुए थे। अब मेरी सहनशक्ति जवाब दे चुकी थी। मैं अब कुछ और ही सोच रहा था। हो सकता है, चाचाजी को यदि मैं पर्चे का रहस्य बतला दूं तो वे शायद इस पर विश्वास ही न करें। हो सकता है, वे मेरी बात हंसी में उड़ा दें और इसे ज़रा भी महत्त्व न दें। पर कहीं यदि वे इसे गंभीर रूप में ले बैठें तो वे कर ही क्या सकेंगे? मान लीजिए तब भी उन्होंने इस ख़तरनाक यात्रा पर जाने की बात सोची तो मैं उन्हें रोक लूंगा। और तब फिर शायद वे अकेले बिना मेरी सहायता के ही रहस्य को ढूंढ़ निकालें। ऐसी दशा में मुझे भी उनके साथ जाना चाहिए।

अब मैंने प्रतीक्षा करना मूर्खता समझा। जितनी जल्दी हो सके, मैंने यह रहस्य बता देने का निश्चय कर लिया।

प्रोफेसर उठे और हैट उठाकर बाहर जाने लगे।

क्या मैं उन्हें हम सब को घर में भूखे ही बंद

करके दोबारा बाहर जाने दे सकता था? नहीं।

"चाचा जी!" मैं बोला।

वे सुन नहीं पाए।

"लिडेनब्रॉक चाचा," मैं कुछ ज़ोर से बोला!

"क्या है, क्या है," वे ऐसे बोले जैसे सोते से एकाएक जाग गए हों।

"जी, क्या आप कुंजी पा गए?"

"कुंजी? कैसी कुंजी? दरवाज़ेवाली कुंजी?"

"नहीं," मैंने उत्तर दिया "उस रहस्य की कुंजी।"

प्रोफ़ेसर ने मेरी ओर देखा। कुछ असाधारण सी बात उन्हें हमारे चेहरे में दिखाई पड़ी। उन्होंने मेरी बांह मज़बूती से पकड़ ली जैसे कि मुझसे कोई प्रश्न पूछ रहे हों।

मैं सिर को एक झटका देकर बोला, "मुझे रहस्य की कुंजी मिल गई है!" उन्होंने अपना सिर हिलाया जैसे कि कह रहे हों, 'तुम मूर्ख हो।'

मैंने फिर सिर हिलाया। उनकी आंखें चमक उठीं और उन्होंने मुझको और भी कसकर पकड़ लिया।

जिस किसी ने हम दोनों को इस समय देखा होता, उसका हमारी मूक भाषा से बड़ा मनोरंजन होता। मैं डर रहा था कि कहीं वे मुझे दबाकर मार ही न डालें।

"जी हां," मैं बोला "यह कुंजी अकस्मात् ही मिल गई समझिए।"

"यह क्या कह रहे हो तुम?" वे परेशान होते हुए बोले।

काग़ज़ का टुकड़ा देते हुए मैंने उनसे कहा, "लीजिए, इसे पढ़िए। लेकिन इसे उलटी ओर से पढ़ना आरंभ कीजिए।"

अब वे सब समझ चुके थे और उनके चेहरे के भाव भी बदल गए थे।

काग़ज़ का टुकड़ा लेकर कांपते हुए स्वरों में धीरे-धीरे वे पूरा संदेश पढ़ गए। उस पर्चे का अर्थ अब बिलकुल स्पष्ट था। अर्ने सैकनसेम ने उसमें भूगर्भ यात्रा के लिए आदेश दे रक्खे थे।

चाचा जी उसे पढ़कर उछल पड़े। वे ऐसे उछले जैसे उन्हें बिजली का करेंट लग गया हो। मारे खुशी के कमरे का सारा सामान फेंकने लगे—विश्वास कीजिए या नहीं। वे इतने खुश थे कि बड़े ही मूल्यवान पत्थरों



को हवा में उछाल देते थे और गिरते समय उन्हें हाथ से रोक लेते थे। अंत में वे शांत होकर कुर्सी पर बैठ गए।

"क्या समय होगा अब?," उन्होंने पूछा।

"तीन बजे हैं," मैंने उत्तर दिया।

"मैंने खाना नहीं खाया है! मैं भूख के मारे मरा जा रहा हूं। फ़ौरन ही मुझे कुछ खाने के लिए दो और फिर..."

"और फिर?"

"मेरा बड़ा थैला ले आओ।"

"आपका बड़ा थैला?"

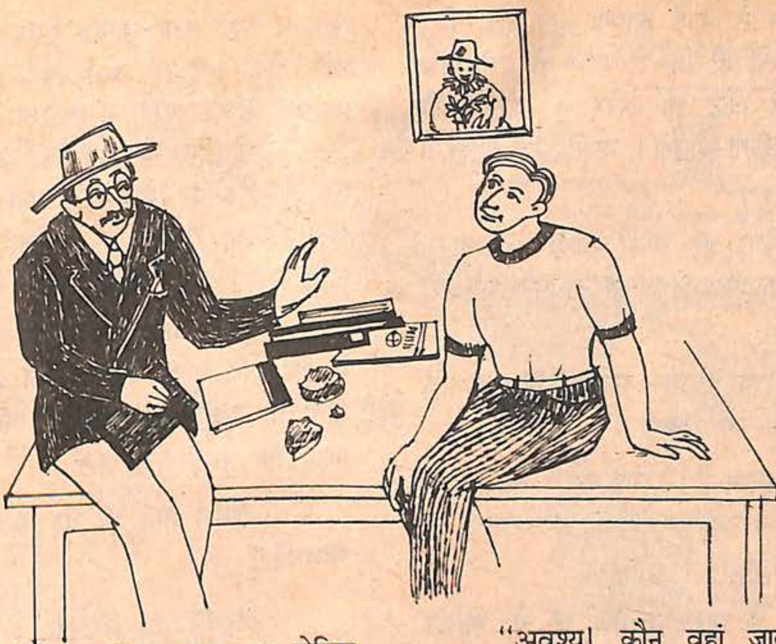
"हां और बांधो उसे।"

"बांधूं उसे? लेकिन क्यों?"

"और साथ ही अपना थैला भी बांधो।" कहते हुए वे खाने वाले कमरे में चले गए।

ये शब्द मेरे हृदय को मथे डाल रहे थे। फिर भी उनकी बात मान लेना ही मैंने ठीक समझा। यह निश्चित था कि वे यात्रा के विरोध में वैज्ञानिक कारण ही सुनेंगे। भूगर्भ में जाना तो बाद की बात थी। कैसे पागलपन की बात है! फिर भी वर्तमान समस्या भोजन की थी।

मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि घर



में खाना न पाकर वे कितना अधिक क्रुद्ध हुए। लेकिन हमने सारी स्थिति उन्हें समझा दी। उन्होंने हमें चाभी दे दी। तुरंत ही मार्था बाज़ार से कुछ खरीदने चली गई।

लगभग एक घंटे बाद वह लौटी। मैं उस समय सोच रहा था कि मुझे चाचाजी से क्या कहना चाहिए।

खाना खाते समय वे बहुत खुश थे। इतने खुश थे कि एक दो बार हंस भी पड़े। अपने स्वभाव के विपरीत वे कुछ मज़ाक भी कर रहे थे। भोजन कर चुकने के बाद उन्होंने मुझसे अपने कमरे में आने को कहा। मैं गया कमरे में। मेज़ के एक सिरे पर वे बैठे और दूसरे सिरे पर मैं। प्रशंसा भरे स्वर में वे मुझसे बोले, "तुम बहुत ही होशियार हो मेरे बच्चे! तुमने ऐसे समय में मेरी सहायता की जब कि मैं सारे प्रयत्न करके हार गया था। मैं इसे कभी न भूलूंगा। इस प्रश्न में तुम्हारा भी भाग होगा।"

मैंने सोचा कि वे इस समय अच्छे मूड में हैं। और यही समय है जब उनसे गंभीरतापूर्वक बात की जा सकती है।

"फिर भी," वे बोले, "किसी से भी इस विषय में कुछ कहना नहीं। कुछ ऐसे वैज्ञानिक हैं जो मुझसे जलते हैं और बहुत से लोग इस यात्रा में जाना चाहेंगे। जब तक हम लौटें नहीं, वे लोग इसके विषय में कुछ न जान पाए।"

"क्या आप सोचते हैं कि बहुत से लोग ऐसे हैं जो जाने का साहस रखते हैं?"

"अवश्य! कौन वहां जाकर प्रसिद्धि पाने की इच्छा नहीं करेगा? यह रहस्य जान कर सैकड़ों लोग इस मार्ग पर चल देंगे।"

"यही तो मुझे संदेह है चाचा जी, कि इसका कोई प्रमाण नहीं कि यह संदेश सच्चा ही हो। क्या यह एक बेहूदा मज़ाक नहीं हो सकता?"

ये अंतिम शब्द (बेहूदा मज़ाक) कहना शायद मेरी मूर्खता थी, जिसके लिए मुझे दुःख हुआ। लेकिन चाचा जी ग़ुस्सा नहीं हुए। वे मुस्कराए और बोले, "हम ख़ुद ही देख लेंगे।"

"अच्छा," मैंने कहा, "लेकिन इस पर्चे के विषय में मैं आप से कुछ पूछ सकता हूं?"

"कहो मेरे बच्चे, जो तुम कहना चाहते हो। बिना किसी संकोच के बोलो। भूल जाओ कि मैं तुम्हारा चाचा हूं। तुम्हें पूरा अधिकार है बात करने का जैसे कि एक वैज्ञानिक दूसरे वैज्ञानिक से करता है।"

"तब फिर इन लैटिन शब्दों के अर्थ बतलाइए ज़रा।"

प्रोफ़ेसर ने उनके अर्थ मुझे बतला दिए।

वास्तव में चाचा जी हर बात का उत्तर दे चुके थे। मैंने शीघ्र ही जान लिया कि उस संदेश के शब्दों में ग़लती ढूंढ़ना मेरे लिए बेकार ही होगा।

अब मैं इसके विपक्ष में कुछ वैज्ञानिक कारण ढूंढ़ने लगा।

"ठीक है," मैं बोला, "संदेश की बात तो साफ़ हो गई। लेकिन हो सकता है कि अर्ने सैकन सेम ने

भूगर्भ यात्रा के संबंध में कोई कहानी सुन रखी हो। बाद में कल्पना कर ली हो कि वे स्वयं ही इस यात्रा पर गए थे, यात्रा कर लौट भी आए थे। पर उन्होंने यह यात्रा कभी की होगी—नहीं। कभी नहीं, सैकड़ों बार नहीं।''

''तुम्हारी इस बात का कोई कारण?'' चाचा जी मुझे बच्चों जैसी मूर्खतापूर्ण बातें करते देखकर मुस्कराते हुए बोले।

''कारण यह है कि विज्ञान साबित करता है कि ऐसी यात्रा की ही नहीं जा सकती।''

''विज्ञान ऐसा कहता है।'' प्रोफ़ेसर ने उत्तर दिया, ''यह विज्ञान कितनी कष्टदायक चीज़ है। संभव को भी असंभव बना देती है।''

मैंने देखा कि वे मुझ पर हंस रहे थे, लेकिन मैं बोलता ही गया।

''जी हां,'' मैं बोला, ''जाना जा चुका है कि पृथ्वी के अंदर जाने पर गर्मी प्रत्येक 70 फुट पर एक डिग्री बढ़ जाती है। इस तरह तो हमें 400 मील गहराई तक जाने पर 20000 डिग्री तापक्रम का सामना करना पड़ेगा। इसका मतलब यह हुआ कि वहां कठोर से कठोर धातु या चट्टान भी गैस की अवस्था में होगी। मैं पूछता हूं, ऐसे स्वप्न में जाना कैसे संभव होगा?''

''तो गर्मी ने तुम्हें परेशान कर रक्खा है?''

''निःसंदेह ही और कुछ ही मील नीचे जाने पर भी 1300^0 तापक्रम हमें मिलेगा।''

''और तुम्हें पिघल जाने का डर है न?''

मैं कुछ ग़ुस्से में बोला ''इसका उत्तर मैं आप पर ही छोड़ता हूं।''

''मैं दूंगा इसका उत्तर,'' प्रोफ़ेसर लिडेनब्रॉक बोले। ''न मैं, न तुम और न कोई दूसरा ही जानता है कि पृथ्वी के अंदर एक मील गहराई के बाद क्या है। नए-नए तथ्यों का आविष्कार होते रहने के कारण विज्ञान हमेशा बदलता रहता है। जो एक दिन सच मालूम होता है वही दूसरे दिन झूठा साबित हो सकता है। अभी कुछ दिनों पहले ही विश्वास किया जाता था कि पृथ्वी पर जितनी ही दूर जाइए, उतनी ही ठंडक बढ़ती जाएगी। अब हम जानते हैं कि ऐसी बात नहीं है। कहीं भी बर्फ़ के तापमान से 40^0 या 45^0 से कम तापक्रम नहीं पाया जाता। ऐसा ही गर्मी के साथ क्यों नहीं होना चाहिए? कोई बिंदु ऐसा भी होना चाहिए जिससे अधिक गर्मी न हो सके।''

ऐसी दशा में जब कि चाचा जी वास्तविक तथ्यों पर न चल कर केवल कल्पना-शक्ति के आधार पर चल रहे थे, मैं कुछ भी न कह सका। उन्होंने बोलना जारी रखा।

''सुनो, बहुत से विद्वानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि पृथ्वी के केंद्र पर 20,000 डिग्री तापक्रम होता तो उन गैसों का इतना अधिक दबाव उत्पन्न हो जाता कि पृथ्वी फट जाती।''

''लेकिन फिर भी यह केवल कल्पना ही तो है, चाचाजी!''

''निश्चय ही कल्पना है, फिर भी अधिकांश भूगर्भशास्त्री इस विचार से सहमत हैं कि पृथ्वी के गर्भ में न तो गैसें ही हैं और न पानी ही। बड़ी-बड़ी चट्टानें और धातुएं भी नहीं हैं पृथ्वी के गर्भ में।''

''यदि आप केवल कल्पना के आधार पर चल रहे हैं चाचा जी! तब मुझे अधिक कुछ नहीं कहना है।''

''मैं कह रहा हूं, मेरे विचार केवल मुझ तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि कई प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के विचार भी यही हैं। क्या तुम्हें सन् 1850 ई. का वह दिन याद है जब महान् वैज्ञानिक सर हम्फ्री डेवी मुझसे मिले थे?''

''जी नहीं, क्योंकि मैं उसके 19 साल बाद पैदा हुआ था।''

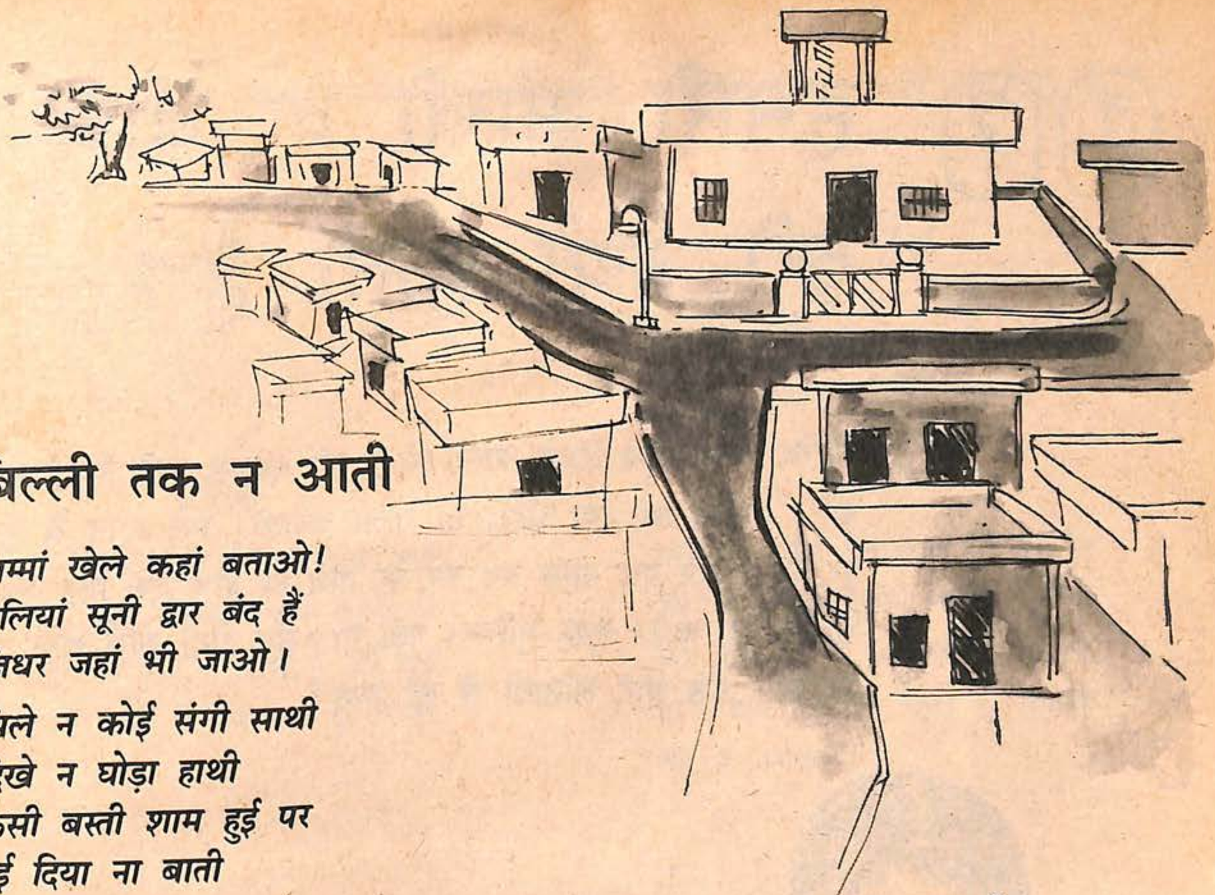
''ठीक है, हम्फ्री डेवी मुझसे मिलने हेम्बर्ग आए हुए थे। और बातों के बीच ही में भूगर्भ की भी बात छिड़ी थी। हम दोनों ही इस विचार से सहमत थे कि भूगर्भ ठोस होना चाहिए था।''

मैंने कारण पूछा।

''कारण यह है। यदि पृथ्वी अंदर से ठोस नहीं है तो समुद्र की भांति उसके अंदर ज्वार-भाटा आने चाहिए। इस तरह से तो हर समय हर स्थान पर भूकंप आते रहना चाहिए।''

''तो भी,'' मैंने कहा, ''पृथ्वी आरंभ से प्रज्ज्वलित अवस्था में थी और हमें मानना ही पड़ेगा कि सबसे

(शेष पृष्ठ 41 पर)



बिल्ली तक न आती

अम्मां खेले कहां बताओ!
गलियां सूनी द्वार बंद हैं
जिधर जहां भी जाओ।

मिले न कोई संगी साथी
दिखे न घोड़ा हाथी
कैसी बस्ती शाम हुई पर
हुई दिया ना बाती
आसमान सूना
पतंग सीलन में दीमक खाती
जालीदार बना दी खिड़की
बिल्ली तक ना आती।

पापा जी गुमसुम बैठे हैं
बंद किए हैं द्वार
दादा दादी चाचा चाची
आंगन बुआ डाल पर झूला
सुआ कबूतर चिड़िया रानी
फूल पत्तियां बहता पानी
यह पूरा संसार
कहां है अम्मां कहां बताओ!

गलियां सूनी द्वार बंद हैं
जिधर जहां भी जाओ।

□ नवीन सागर
चित्र : चीनू पटेल





अंजू चौधरी, चौथी, शिक्षा निकेतन, तिलोनिया



नन्हे ?

हमारी आंखों के बीच दूरी क्यों होती है ?

इसलिए ताकि हम दिखने वाली चीज़ों की एकदम सही स्थिति जान सकें। काग़ज़ पर एक छोटा-सा गोला बनाओ। इसे अपने से कुछ दूर रखो, और एक आंख बंद कर के गोले के बीच एक बिंदु लगाने की कोशिश करो। कुछ मुश्किल पड़ी ना ? अब दोनों आंखें खोल कर लगाओ। इस बार आसानी से हो गया ?





चित्र, शब्द, सज्जा : स्मिता अग्रवाल
(टाइम लाइफ एनसाइक्लोपीडिया पर आधारित)

एक और बात है, इससे हमें दिखने वाला क्षेत्र फैल जाता है।



अपने दोनों हाथ अपने चेहरे के आगे रखो। अब धीरे-धीरे दोनों हाथों को बाहर की ओर ले जाओ - जब तक कि वे आंखों से ओझल न हो जाएं।



अब यही काम एक आंख बंद कर के भी करो। तुम देखोगे कि जिस ओर की आंख बंद है उस ओर का हाथ दूसरे वाले हाथ से पहले ही दिखना बंद हो जाएगा।

करके देखो

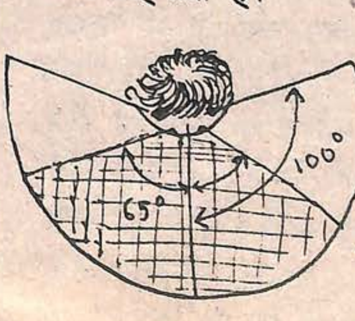




अपना संतुलन बनाए रखने में भी हम अपनी आंखों की मदद लेते हैं। इस लड़के की तरह एक टांग पर खड़े हो कर देखो। दोनों आंखें खुली हों तो काफ़ी देर तक खड़े रह सकते हो। अब ज़रा एक आंख बंद करके कोशिश तो करो।

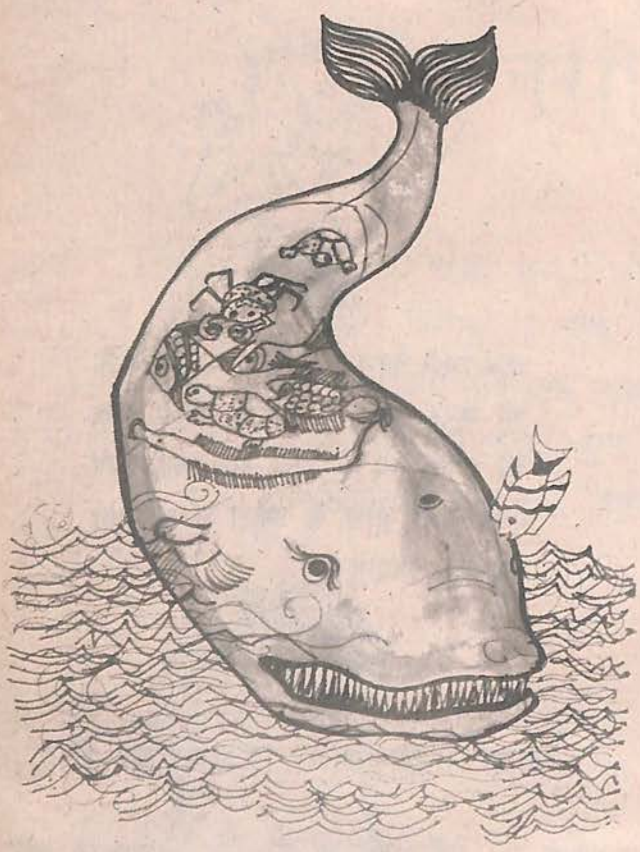
माता पिता और शिक्षक के लिए

चीज़ों को सही परिप्रेक्ष्य में और त्रिआयामी रूप में देखना तभी संभव है जब हम दोनों आंखों से देखें। क्योंकि हमारी दोनों आंखों के बीच कुछ दूरी है इसलिए हर आंख से कुछ अलग तस्वीर दिखती है। पर जब ये दोनों तस्वीरें ऑप्टिकल नर्व से हो कर गुज़रती हैं तो मिल जाती हैं और एक त्रिआयामी तस्वीर उभरती है। ऊपर से नीचे तक व दाएं से बाएं तक जो हम देख पाते हैं वह हमारा दृष्टि क्षेत्र कहलाता है।



आंखों के बीच की दूरी बढ़ने से यह क्षेत्र और भी बढ़ जाता है।

व्हेल का गला कैसे बना!



बहुत पहले की बात है, दूर देश के समुद्र में एक व्हेल मछली रहती थी, ज़रा ध्यान से सुनो मेरी आंखों के तारो। वो व्हेल, मछली ही मछली खाया करती थी। वो हेंगरा खाती थी, मंगरा खाती थी, कछुआ और केंकड़ा खाती थी, वो दुम वाली और बेदुम की मछली खाती थी, मेंढ़क और घोंघा खाती थी, सेंवार और काई खा जाती थी और चिकनी-फिसलनी सांप जैसी ईल मछली भी खाती थी। जहां जो भी मछली थी, उसने सब खा डाली थीं। अब बस समुद्र में एक छोटी-सी झख मछली भर बची थी (जो इतनी चालाक थी कि उसे पकड़ने को सब लोग बस झख मार कर रह जाते थे)। वो झख मछली हमेशा व्हेल के दाहिने कान कें पीछे रहती थी जिससे उसकी पकड़ में न आ सके।

एक दिन व्हेल ने अपनी पूंछ पर खड़े होकर कहा, "मैं बहुत भूखी हूं।"

छोटी-सी झख अपनी उतनी ही छोटी आवाज़ में बोली, "हे राजकुल में जन्मी, बड़े दिल वाली महान मछली क्या तुमने कभी आदमी चख कर देखा है?"

"नहीं, वह होता क्या है?" व्हेल ने पूछा।

झख ने जवाब दिया, "बहुत अच्छा, चुलबुल-सा, खुदबुद-सा।"

"तो कुछ ले आओ, मेरे लिए भी," व्हेल बड़ी उतावली से बोली और अपनी पूंछ फटकार-फटकार के उसने समुद्र पर फेन उठा दिया।

झख बोली कि, "एक बार में एक ही काफ़ी होगा। तुम उत्तर दिशा में पचास अक्षांश तक और पश्चिम दिशा में चालीश देशांतर तक जाओ (यह जादू की बात है) तो वहीं तुम्हें समुद्र के बीचोंबीच छोटे से तख़्ते पर बैठा एक आदमी मिलेगा। वो बस एक नीली लुंगी पहने है जिसे उसने एक मज़बूत डोरी से बांध रखा है, जिसमें एक बड़ा चाकू खोंसा हुआ है (मेरी आंखों के तारो, उस डोरी की बात भूलना नहीं)। वह एक मल्लाह है जिसका जहाज़ डूब गया है।"

व्हेल जितनी तेज़ी से तैर सकती थी, पचास अक्षांश उत्तर की तरफ और चालीस देशांतर पश्चिम की तरफ तैरती गई। और अंत में उसे डूबे जहाज़ का मल्लाह मिल ही गया। जो एक अकेला बस लुंगी को डोरी से बांधे (डोरी को खास तौर से याद रखना मेरी आंखों के तारो) और उसमें लंबा चाकू खोंसे, अपने छोटे से तख़्ते पर बैठा पानी में पैर डाले, छप



छप कर रहा था (उसकी अम्मां ने पानी में पैर डालने को मना नहीं किया था, नहीं तो वह हरग़िज़ पैर न डालता। क्योंकि वह बड़ा ही चतुर और सूझबूझ वाला आदमी था)।

तब व्हेल ने अपना मुंह खोला, इतना खोला, इतना खोला कि उसका मुंह पूंछ से छुल गया और तब व्हेल ने डूबे जहाज़ के मल्लाह को, उसके तख़्ते को जिस पर वह बैठा था, उसकी नीली लुंगी और डोरी (उसे तुम भूलना नहीं) और उसमें खुंसे चाकू, उन सब को निगलकर अपने पेट के गरम-गरम अंधेरे तहख़ाने में पहुंचा दिया। तब फिर उसने ख़ुशी से ज़ोर का चटखारा लिया और अपनी पूंछ पर तीन बार फिरकनी की तरह घूम गई।

पर जैसे ही वह मल्लाह, जो चतुर और सूझबूझ वाला आदमी था, व्हेल के पेट के गरम अंधेरे तहखाने में पहुंचा तो वो चीख़ा, वो चिल्लाया, उसने क्या-क्या ऊधम मचाया। वो गिरा, वो पड़ा, वो उछला, वो छलांगा, वो टकराया, वो भहराया, उसने सिर फोड़ा, उसने न जाने क्या-क्या तोड़ा, उसने टटोल के देखा, उसने झकझोर के फेंका, वो कूदा, वो फांदा, उसने नाचा नाच भांगड़ा, जो उसे वहां नहीं नाचना था और व्हेल सचमुच बहुत त्रस्त और दुःखी हो गई (तुम डोरी को भूल तो नहीं गए)।

तब उसने झख से कहा, "यह आदमी बहुत खुदबुद-खुदबुद है, ऊपर से उसके मारे मुझे हिचकी आने लगी है। अब मैं क्या करूं?"

झख बोली, "उससे कहो कि बाहर निकल आए।"

तब व्हेल ने अपने ही गले में चिल्लाकर डूबे जहाज़ के मल्लाह से कहा, "तुम बाहर निकलो और ज़रा तमीज़ से रहो। मुझे हिचकी आ रही है।"

मल्लाह चिल्लाया, "नहीं, नहीं कभी नहीं, मैं तो यहीं रहूंगा। पहले तुम मुझे मेरे देश के

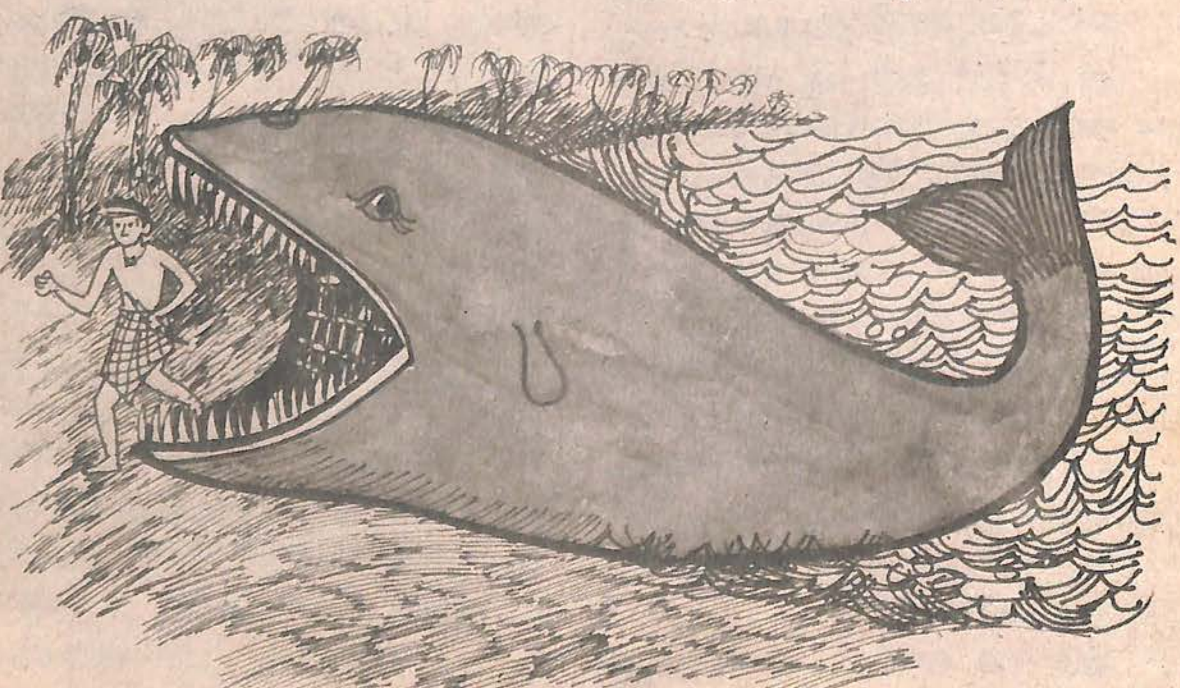
नारियल के पेड़ वाले समुद्र तट पर ले चलो, तब मैं सोचूंगा कि क्या करूं।" और उसने और भी ज़ोर-ज़ोर से उछलकूद कर नाचना शुरू कर दिया।

झख, व्हेल से बोली, "अब तो उसे उसके देश के तट पर ले चलो, इसी में भला है। मुझे तुम्हें पहले ही जता देना था कि ये बड़ा चतुर और सूझबूझ वाला आदमी है।"

अब तो व्हेल ने अपने दोनों गलफड़ों और पूंछ का सारा ज़ोर लगाकर तैरना शुरू किया और तैरती-तैरती नारियल के पेड़ वाले समुद्र तट पर पहुंच गई। वह इतनी तेज़ी से आई कि आधी तो तट की बालू पर चढ़ गई। अपना मुंह जितना खोल सकती थी, खोलकर बोली, "अब तुम जहां चाहो, अपने गांव के लिए रेल, बस या बैलगाड़ी, जो तुम पकड़ना चाहो, बाहर निकलो और पकड़कर चले जाओ।" व्हेल ने मन ही मन सोचा कि भाड़ में जाए ऐसा खाना और वह गुस्से में बोली, "धत्तेरे की।" ज्यों ही उसने धत्त कहा कि मल्लाह उसके पेट से बाहर चला आया। पर इसके पहले ही, जब व्हेल तैरती-तैरती चली आ रही थी, तब मल्लाह ने, जो बड़ा चतुर और सूझबूझ वाला आदमी था, अपने बड़े चाकू से अपने तख़्ते को काट-काटकर उसकी लकड़ी की जाफ़री बनाकर उसे डोरी से कस दिया (अब समझे, डोरी की याद रखना क्यों ज़रूरी था) और तब उसने उस जाफ़री को खूब अच्छी तरह से व्हेल के गले में फंसा दिया कि वह ज़रा भी न सरके। फिर उसने ये मंत्र पढ़ा, जो शायद तुमने न सुना हो, मैं सुनाता हूं—

बनी जाफ़री जोड़ तोड़ के
फंसी गले में, खाना रोके

कारण यह है कि मल्लाह ओझा भी था। तब मल्लाह बाहर निकला और अपने घर अपनी मां के पास गया, जिसने उसे पानी में पैर डालने से नहीं रोका था। फिर उसकी शादी हो गई और वह चैन से रहने लगा। व्हेल भी चैन से रहने लगी। पर, फिर उस दिन के बाद से अपने गले में फंसी जाफ़री के कारण, जो ऐसे कसकर फंसी है कि न वो उसे उगल सकती है और न निगल सकती है, व्हेल अब बस छोटी-छोटी मछली ही खाती है। तुम समझ गए न कि क्यों

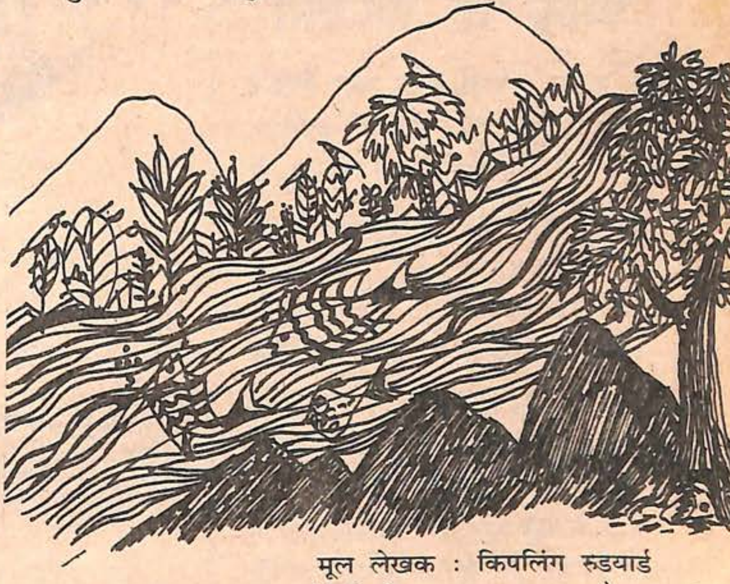


व्हेल अब न आदमी खाती है, न लड़के खाती है और न छोटी लड़कियां ही खाती है।

छोटी-सी झख मछली जाकर भूमध्य रेखा की देहरी के नीचे वाले कीचड़ में छिप गई है। उसे डर है कि कहीं व्हेल उससे ग़ुस्सा न हो गई हो।

मल्लाह अपना चाकू अपने साथ लेता गया। वह जब तट की बालू पर चल रहा था तो अपने लुंगी तो पहने था पर डोरी पीछे छूट गई थी। तुम्हें याद है न, उसी से तो ज़ाफरी को कस कर बांधा था और अब बस, कहानी थी तो ख़त्म।

तुम्हें एक बात और बता दूं, हो सकता है तुम्हें पहले से पता हो, फिर भी सुन लो। झख एक मछली होती है जो तेज़ बहते हुए पानी में रहती है। झख बड़ी फुर्तीली और चालाक मछली है। उसे पकड़ना आसान काम नहीं, बल्कि बड़ा ही मुश्किल और ढेरों समय खाने वाला काम है। तभी तो बेकार की मेहनत और समय गंवाने के लिए मुहावरा ही बन गया है—झख मारना। लेकिन झख समुद्र में नहीं रहती, वो ताज़े पानी की मछली है पर कहानी तो कहानी, इसमें कुछ तो बातें बनानी, कुछ नई-पुरानी, कुछ तुम्हारी जानी, कुछ यों ही अनजानी।



मूल लेखक : किपलिंग रुडयार्ड
अंग्रेज़ी से अनुवाद : सुधा चौहान
सभी चित्र : शोभा घारे

(भूगर्भ की यात्रा का शेष)

पहले ऊपरी सतह ही ठंडी हुई।"

"बिलकुल नहीं", चाचा जी बोले "पृथ्वी की सिर्फ ऊपरी सतह ही जलने की अवस्था में थी। कुछ धातुएं पानी के संपर्क में आते ही जलने लगी थीं। पृथ्वी की सतह इन्हीं धातुओं से बनी थी। वर्षा होने पर ये जलने लगीं। वर्षा का पानी जैसे-जैसे गहराई में पहुंचता गया, अंदर भी आग लगती गई और विस्फोट आदि होते रहे। इसीलिए प्रारंभ में अनेकों ज्वालामुखी पर्वत थे।"

मैं सोचने लगा कि चाचा जी ठीक तो कहते हैं।

"तुम देखोगे," वे बोले, 'भूगर्भशास्त्री यह कभी भी साबित न कर पाए कि भूगर्भ गर्मी के कारण जलती हुई अवस्था में हैं। मेरे विचार से वह गर्म नहीं है। गर्म हो ही नहीं सकता, फिर भी अर्ने सैकन सेम की ही भांति हम जाकर देखेंगे कि कौन ठीक है।"

"हां, हम ज़रूर देखेंगे," मैं चाचा जी की ही तरह खुश होकर बोला, "हमें यह भी आशा है कि भारी हवा के दबाव से हम प्रकाश की समस्या भी हल कर लेंगे।"

"जी हां, यह बिलकुल संभव है।"

"यह तो निश्चित ही है," चाचा जी बोले, "लेकिन याद रक्खो, इस विषय में किसी से कुछ बताना नहीं।"

और इस प्रकार हमारी बात समाप्त हुई। मुझे लगने लगा कि मेरा सिर चक्कर खा रहा हो। मैं चाचा जी के कमरे से बाहर आ गया, जिससे कुछ हवा ही लगे लेकिन हवा बहुत ही धीमी थी। अतः मैं नदी के किनारे-किनारे टहलने लगा।

क्या ऐसी यात्रा संभव है? क्या मुझे इस पर गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए? क्या वे एक महान् वैज्ञानिक की मूर्खतापूर्ण बातें ही थी जिन्हें मैंने सुना था? मुझे क्या करना चाहिए?

जूलेवर्न के उपन्यास 'ए जर्नी इन टू दी सेंटर ऑफ अर्थ' का अनुवाद। अनुवादक : प्रभात किशोर मिश्र। सौजन्यः इंडियन प्रेस, इलाहाबाद। सभी चित्र : शोभा घारे।

छायामाया

बात कहूं मैं सच्ची, नहीं है कोई अचंभा
छाया के संग कुश्ती लड़ थक गया मेरा कंधा
मैं व्यापारी छाया का, नहीं जानते बाबूजी?
धूप की छाया, चांद की छाया, ये हैं मेरी पूंजी!

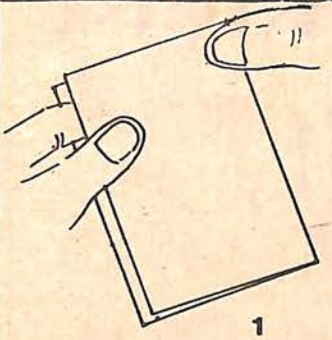


अजीब परेशानी

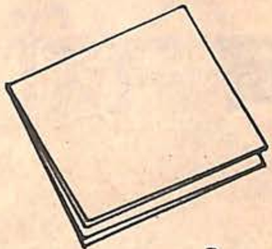
सब लिक्खा है इस पुस्तक में दुनिया भर की सारी ख़बरें
किस-किस सरकारी दफ्तर में किस साहब की हैं क्या क़दरें
किस तरह बनाते चटनी, किस तरह पुलाव बनाते हैं
हर क़िस्मी घूंसेबाजी का नंगानाच दिखाते हैं
साबुन-स्याही मंजन इत्यादि बनाने की पक्की विधियां
हम कैसे करें श्राद्ध, और पूजा के पर्वों की तिथियां
सब लिक्खा है पर देखो तो मुझको मिलती ना एक बात
पागल जो सांड़ पड़ा पीछे, रोकूं उसको किस तरह तात!



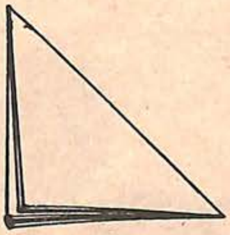
☐ चित्र एवं कविता : सुकुमार राय
बंगला से अनुवाद : लाल्टू



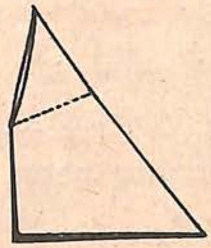
1



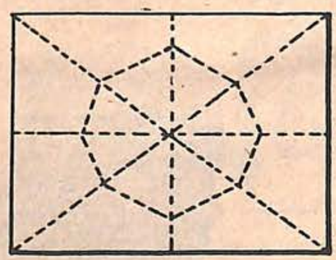
2



3



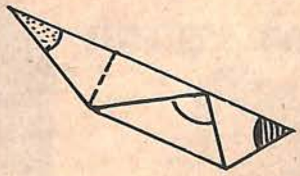
4



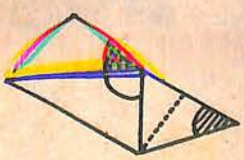
5



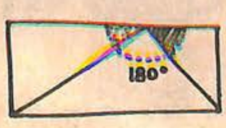
6



7



8



9

अष्टभुज और त्रिकोण के कोण

पिछले कुछ अंकों से हम कागज़ से ज्यामिति के कुछ नमूने देखते आ रहे हैं। इस बार कुछ और चीज़ें बनाते हैं।

एक पन्ने को पहले दोहरा मोड़ो (चित्र-1)। फिर उसे चार तहों में मोड़ो (चित्र-2)। अब चार तहों वाले कोने को मोड़कर आठ परतों वाला कोण बनाओ (चित्र-3)। आठ तहों वाले त्रिकोण को मोड़ो (चित्र-4)। अब पन्ने को खोलने पर तुम्हें बीच में एक नियमित अष्टभुज दिखाई देगा (चित्र-5)। इसमें यह भी देख सकते हो कि 360° का मध्यकोण 45° के आठ बराबर खंडों में बंट गया है। क्या तुम इस अष्टभुज के अंदर एक और अष्टभुज बना सकते हो—मोड़ कर।

स्कूल में तुमने रेखागणित में एक साध्य सिद्ध की होगी कि किसी भी त्रिकोण के तीनों कोणों का जोड़ 180° होता है। इसे हम एक सरल क्रिया द्वारा आसानी से दिखा सकते हैं।

एक कागज़ का त्रिकोण लो (चित्र-6)। अगर तुम इस त्रिकोण के तीनों कोणों को चित्र 7, 8 एवं 9 में दिखाए तरीके से मोड़ोगे तो तीनों कोण एक दूसरे के साथ सटने पर एक सरल रेखा बनाएंगे (चित्र-9)। उनके द्वारा बनाया हुआ खंड आधा गोला या 180° होगा।

☐ अरविंद गुप्ता

फ़िरक़ापरस्ती का मतलब मज़हब नहीं है!

फ़िरक़ापरस्ती का हिन्दुस्तान के ख़ास मसलों-ग़रीबी और बेरोज़गारी से कोई ताल्लुक नहीं है। सभी सम्प्रदायों के किसानों, मज़दूरों, व्यापारियों, दुकानदारों और निम्न मध्यम वर्गीय तबक़ों को इससे कोई फ़ायदा नहीं है।

एक फ़िरक़ापरस्ती दूसरी को ख़त्म नहीं करती। एक से दूसरी को ख़ुराक मिलती है और दोनों मोटी होती जाती हैं।

जवाहर लाल नेहरू

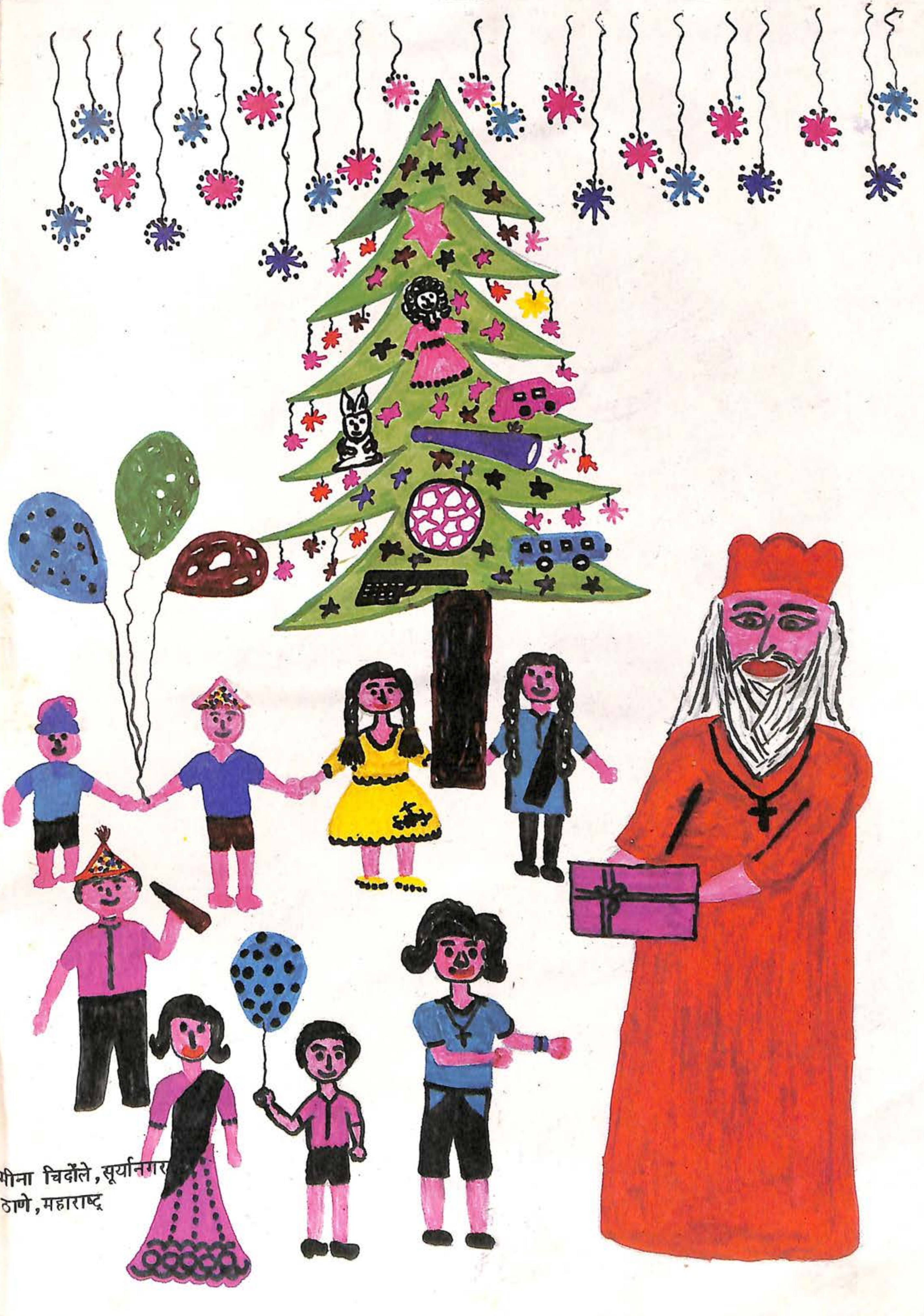


प्रदेश में साम्प्रदायिक सद्भाव की गौरवशाली परम्परा है, इसे क़ायम रखिए।

सावधान रहें, अफ़वाहों से बचें

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जनहित में प्रकाशित।

ज.सं.सं./1312/डी/89



मीना चिदौंले, सूर्यानगर
ठाणे, महाराष्ट्र

पंजीयन क्रमांक 1317/सी/85 के अंतर्गत भारत के समाचार-पत्रों के रजिस्टार द्वारा पंजीकृत।
डाक पंजीयन क्रमांक BPL/DN/MP/431/89



एहसान पटेल, छटवीं, सांवेर, इंदौर

रेक्स डी रोजारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा भंडारी ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/208, अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना।